नारी लोक

षष्टिपूर्ति अभिवन्दना विशेषांक

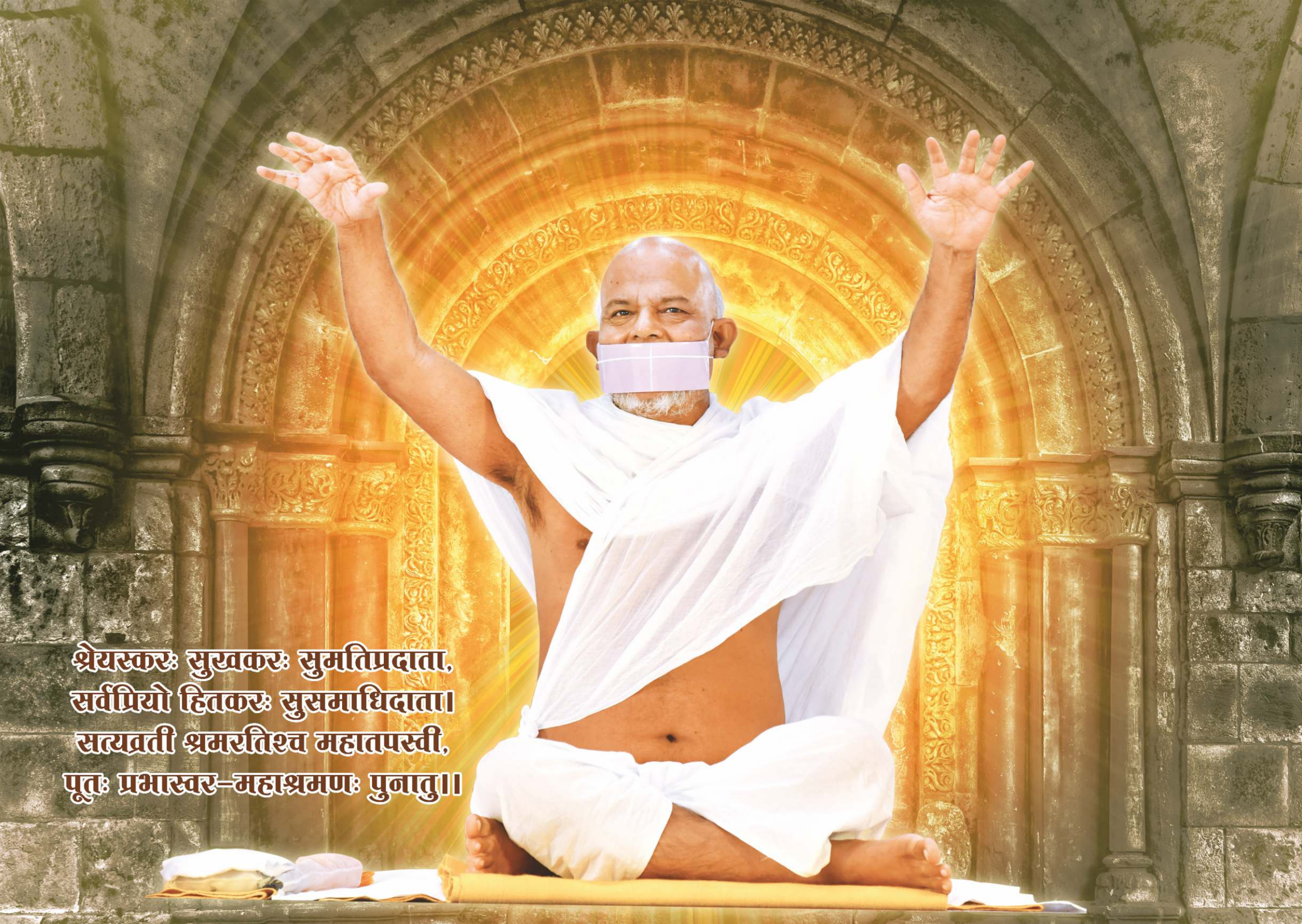
श्रेयस्करः सुखकरः सुमतिप्रदाता,
सर्वप्रियो हितकरः सुसमाधिदाता।
सत्यव्रती श्रमरतिश्च महातपस्वी,
पूतः प्रभास्वर-महाश्रमणः पुनातु।।

निस्पृहता
निर्लिप्तता
निर्विकारिता
निश्छलता
तेजस्विता
क्षमाशीलता
दयालुता
सिद्धांतप्रियता
वैचारिक उदारता
के
दुर्लभ समवाय

आचार्य श्री महाश्रमणजी

के **षष्टिपूर्ति** एवं

युगप्रधान अलंकरण

के पावन अवसर पर

नारीलोक

अभिवन्दना विशेषांक
सादर समर्पित

षष्टिपूर्ति

आचार्य महाश्रमण

शिखर आरोहित करते कदम

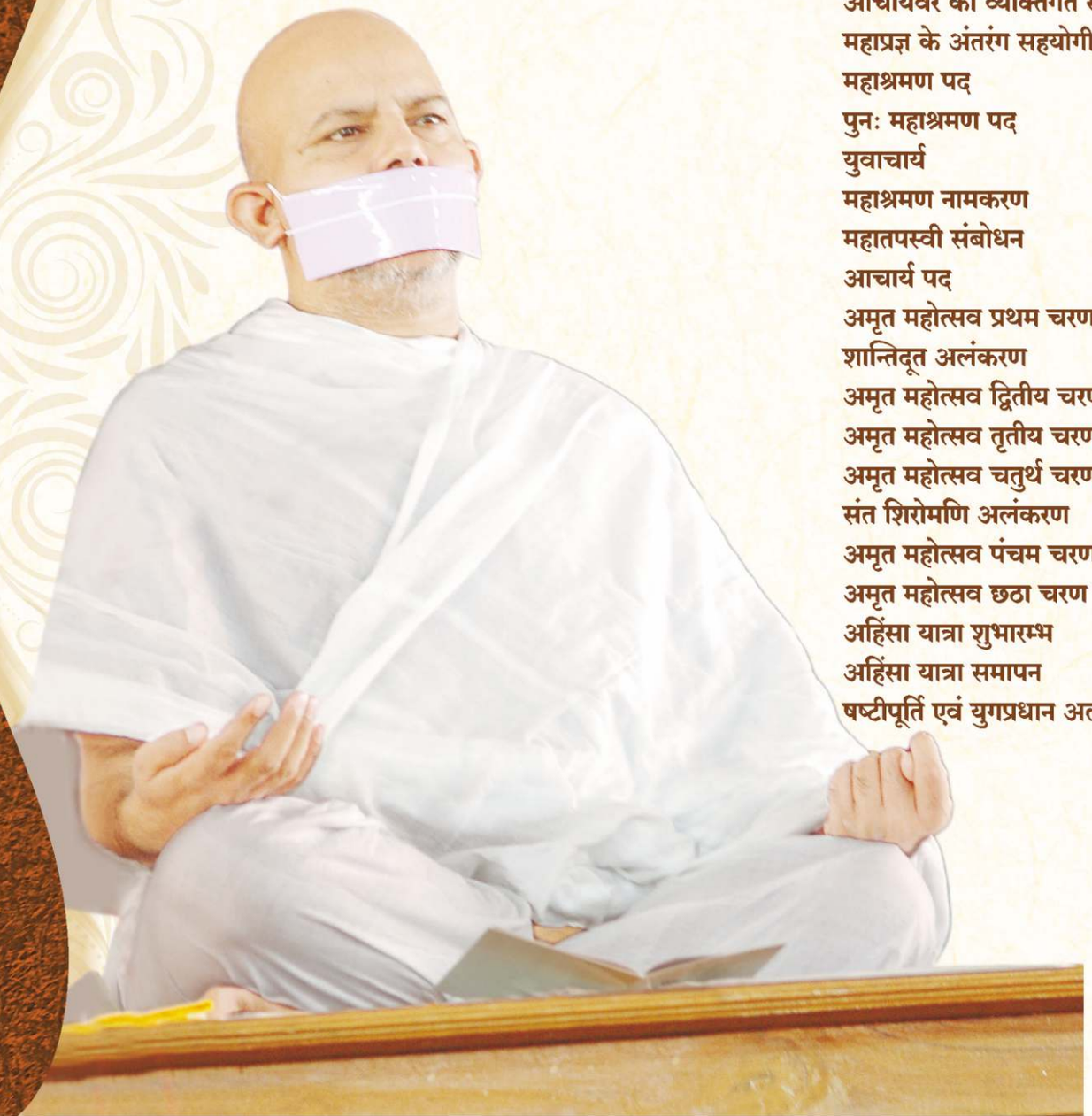

जन्म	13 मई 1962	सरदारशहर
दीक्षा	5 मई 1974	सरदारशहर
आचार्यवर की व्यक्तिगत सेवा में नियुक्त	13 मई 1984	लाडनूं
महाप्रज्ञ के अंतरंग सहयोगी	16 फरवरी 1986	उदयपुर
महाश्रमण पद	9 सितम्बर 1989	लाडनूं
पुनः महाश्रमण पद	5 फरवरी 1995	दिल्ली
युवाचार्य	14 सितम्बर 1997	गंगाशहर
महाश्रमण नामकरण	14 सितम्बर 1997	गंगाशहर
महातपस्वी संबोधन	10 जुलाई 2007	उदयपुर
आचार्य पद	23 मई 2010	सरदारशहर
अमृत महोत्सव प्रथम चरण	12 मई 2011	कांकरोली
शान्तिदूत अलंकरण	29 मई 2011	उदयपुर
अमृत महोत्सव द्वितीय चरण	7-9 सितम्बर 2011	केलवा
अमृत महोत्सव तृतीय चरण	29 जनवरी 2012	आमेट
अमृत महोत्सव चतुर्थ चरण	25 अप्रैल से 1 मई 2012	बालोतरा
संत शिरोमणि अलंकरण	20 जुलाई 2013	लाडनूं
अमृत महोत्सव पंचम चरण	14 अक्टूबर 2013	लाडनूं
अमृत महोत्सव छठा चरण	12 दिसम्बर 2013	सरदारशहर
अहिंसा यात्रा शुभारम्भ	9 नवम्बर 2014	नई दिल्ली
अहिंसा यात्रा समापन	27 मार्च 2022	नई दिल्ली
षष्टीपूर्ति एवं युगप्रधान अलंकरण	11 मई 2022	सरदारशहर

स्थानांग सूत्र में आचार्य की आठ संपदाओं का उल्लेख है। दशाश्रुतस्कन्ध में इनका विस्तृत वर्णन उपलब्ध है। प्रवचनसारोद्धार में कही शब्दभेद और कहीं अर्थभेद के साथ इन संपदाओं का उल्लेख मिलता है। स्थानांग की वृत्ति में भी इनके भेदापभेदों की चर्चा है। मूलतः आठ संपदाओं का स्वरूप इस प्रकार है :–

1. आचार संपदा : संयम की समृद्धि
2. श्रुत संपदा : श्रुत शास्त्रीय ज्ञान की समृद्धि
3. शरीर संपदा : शारीरिक सौन्दर्य
4. वचन संपदा : वचन कौशल
5. वाचना संपदा : अध्यापन पटुता
6. मति संपदा : बुद्धि कौशल
7. प्रयोग संपदा : वाद कौशल
8. संग्रह परिज्ञा : संघ व्यवस्था में निपुणता

इन संपदाओं का संबंध बाह्य और अंतरंग–व्यक्तित्व दोनों पक्षों से है। व्यक्तित्व संपन्नता के साथ–साथ संघीय व्यवस्थाओं के समायोजन में आचार्यों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है।

इन आठों सम्पदाओं से सुशोभित परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी के चरणों में षष्टिपूर्ति के पावन अवसर पर समग्र महिला समाज की सादर अभिवन्दना।

पादांबुज में श्रद्धासिक्त अभिवन्दना

नीलम सेठिया	सौभाग बैद	मधु देरासरिया
अध्यक्ष	चीफ ट्रस्टी	महामंत्री

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

षष्टिपूर्ति

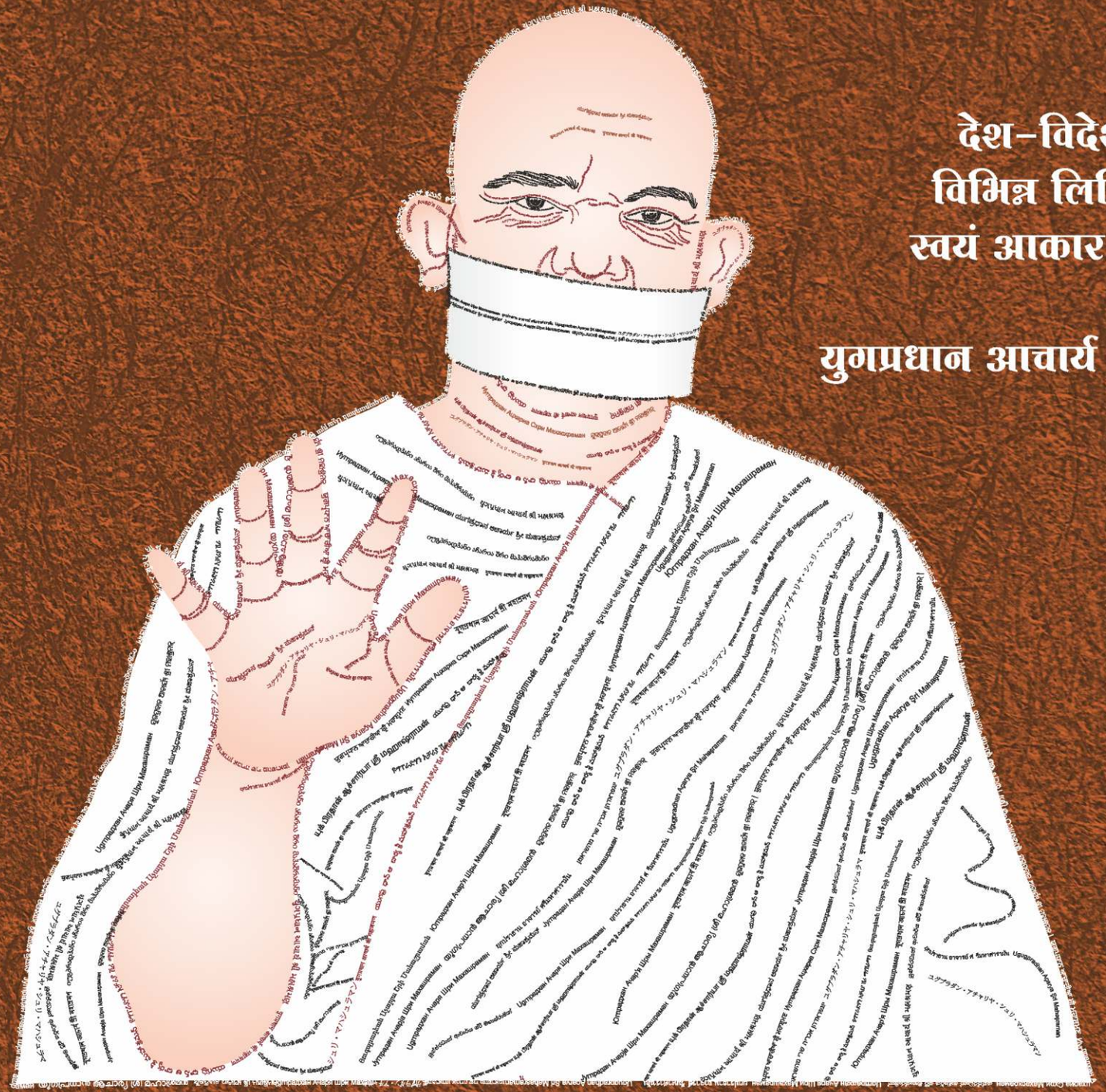

देश-विदेश की
विभिन्न लिपियों ने
स्वयं आकार लिया...

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण

अध्यक्षीय अनुभूति

सम्मानीय बहनों,

आज जब आचार्यप्रवर की षष्टीपूर्ति एवं युगप्रधान अलंकरण के अवसर पर नारीलोक अभिवन्दना विशेषांक हेतु अनुभूति लिखने बैठी, तो विचारों का प्रवाह थम ही नहीं रहा था। विचारों ने लेखनी से पूछा –

क्या आचार्य महाश्रमण सागर में मोती की तरह हैं?

क्या महाश्रमण शीतल शान्त निर्झर की तरह है?

क्या वे पर्वत की तरह अप्रकम्पित हैं?

क्या पूज्यप्रवर वचनों से क्षीर सागर की तरह है?

लेखनी ने प्रत्युत्तर दिया, 'उपमाएं अकसर एकदेशीय होती है। इसलिए – महाश्रमण कैसे... बस महाश्रमण जैसे !!!'

आचार्य प्रवर के धीर गम्भीर, वीर व्यक्तित्व से सभी परिचित हैं। ज्यादा सुनने और कम बोलने वाले वाले, कम बोल कर ज्यादा कर गुजरने वाले, अल्पभाषी, मितभाषी, संकल्प के धनी आचार्य महाश्रमणजी आहिस्ते से चिन्तन के ऐसे ज्योतिर्द्वार में प्रवेश कर जाते हैं जिससे पूरे धर्मसंघ में ऐसा ज्योति प्रपात होता है, जिसकी आलोक रश्मियों से धर्मसंघ जगमगा उठता है।

आपश्री का कठोर स्व–अनुशासन धर्मसंघ के लिए उदाहरण बनता है एवं दूसरों पर किए जाने वाला अनुशासन वात्सल्य और करुणा से ओत:प्रोत तो होता है मगर उसमें शिथिलता के लिए कोई अवकाश नहीं होता। हर क्षण को सार्थक करने का सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है आपका पुरुषार्थी जीवन। आपकी सुव्यवस्थित एवं संतुलित दिनचर्या को देख कर हर व्यक्ति प्रेरणा पा सकता है कि हजारों की भीड़ में घिरे रहने के उपरान्त भी समाधिस्थ कैसे रहा जा सकता है। शान्त, सौम्य, मुस्कुराता तेजोमय आभामण्डल आपकी साधना की आत्मस्थता की कहानी कह जाता है। 'जहां तक मैं सोचता हूं' या 'जहां तक मुझे याद है' या 'अगर मैं भूल नहीं कर रहा हूं' आदि वाक्य आप के मुखश्री से निनादित होते मैंने सुना है। एक–एक शब्द के लिए पल–पल की जागरूकता प्रणम्य है, अनुकरणीय है। आपकी उपदेशात्मक शैली अधिकतर बोल कर बताने की अपेक्षा स्वयं आचरण में उतार कर कहने की होती है।

षष्टीपूर्ति और युगप्रधान अलंकरण के अवसर पर आचार्यप्रवर के सिद्धान्तों को यदि हम आत्मसात् करना चाहें तो उनके द्वारा सृजित साहित्य योगभूत बन सकते हैं। महाश्रमण से संवाद अर्थात् संवाद भगवान से, महाश्रमण की सन्निधि अर्थात् दु:ख मुक्ति, महाश्रमण का पाथेय – आओ हम जीना सीखें, महाश्रमण को जानना अर्थात् शिलान्यास धर्म का, महाश्रमण बनने की राह पर चलना अर्थात् धम्मो मंगलमुक्किट्ठं। ऐसे विरल, विराट व्यक्तित्व को गुरु के रूप में पाना और सतत् प्रवाह होती उस आनन्द की धारा को शब्द सीमा में बांधना दुष्कर है। उनकी गुणमाला हेतु वर्णमाला के अक्षरों का गुंफन आसान नहीं।

शासन माता ने स्वयं के अमृत महोत्सव पर आचार्यप्रवर से एक वरदान मांगा। उस वरदान पर गुरुवर ने अपनी स्वीकृति की मोहर लगाकर सम्पूर्ण धर्मसंघ को हर्षोल्लासित कर दिया। सरदारशहर की पावन धरा पर युगप्रधान अलंकरण समारोह में शासन माता को दिए हुए वरदान को आकार लेते देख, हम परमानन्द की अनुभूति कर रहे हैं। 'महाश्रमण' में 'महावीर' का सिद्धत्व अन्त:स्तल का स्पर्श करता है और मानवता को गुरु महिमा के गौरव को साक्षात्कार करवाता है। अनेकान्त की भूमि पर अध्यात्म के प्रयोग करवाने वाले ज्योतिर्धर आचार्यश्री महाश्रमणजी को समग्र महिला समाज की ओर से श्रद्धासिक्त भावप्रणत् अभिवन्दना...

स्नेहाकांक्षी

नीलम सेठिया

षष्टिपूर्ति

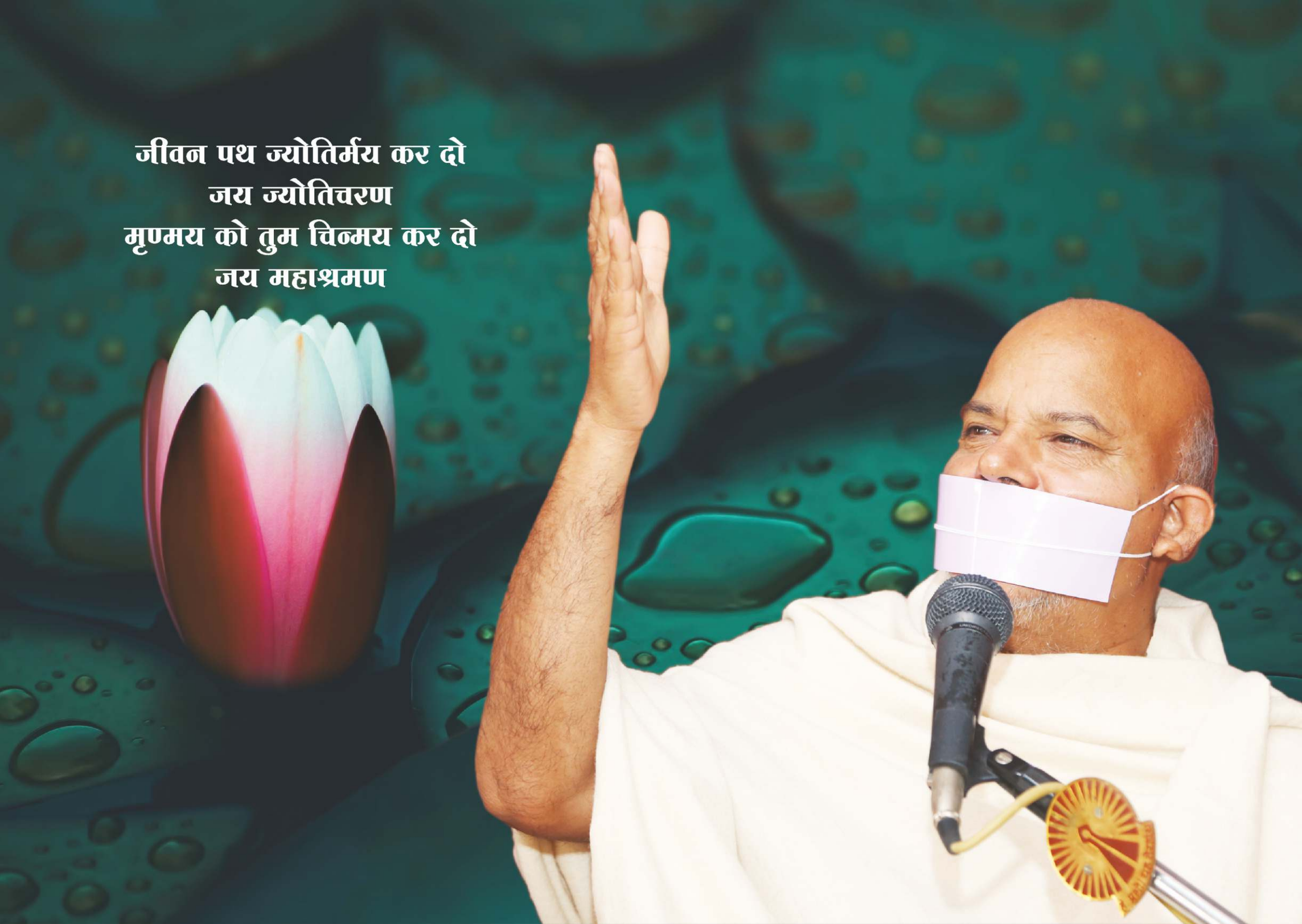
जीवन पथ ज्योतिर्मय कर दो
जय ज्योतिश्चरण
मृण्मय को तुम चिन्मय कर दो
जय महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण

आचार्य महाश्रमण... युगप्रधान आचार्य महाश्रमण क्यों?

क्योंकि वो ज्ञान हैं, वो ध्यान हैं, वो पूर्ण प्रकाश है, वो अनन्त आकाश है।

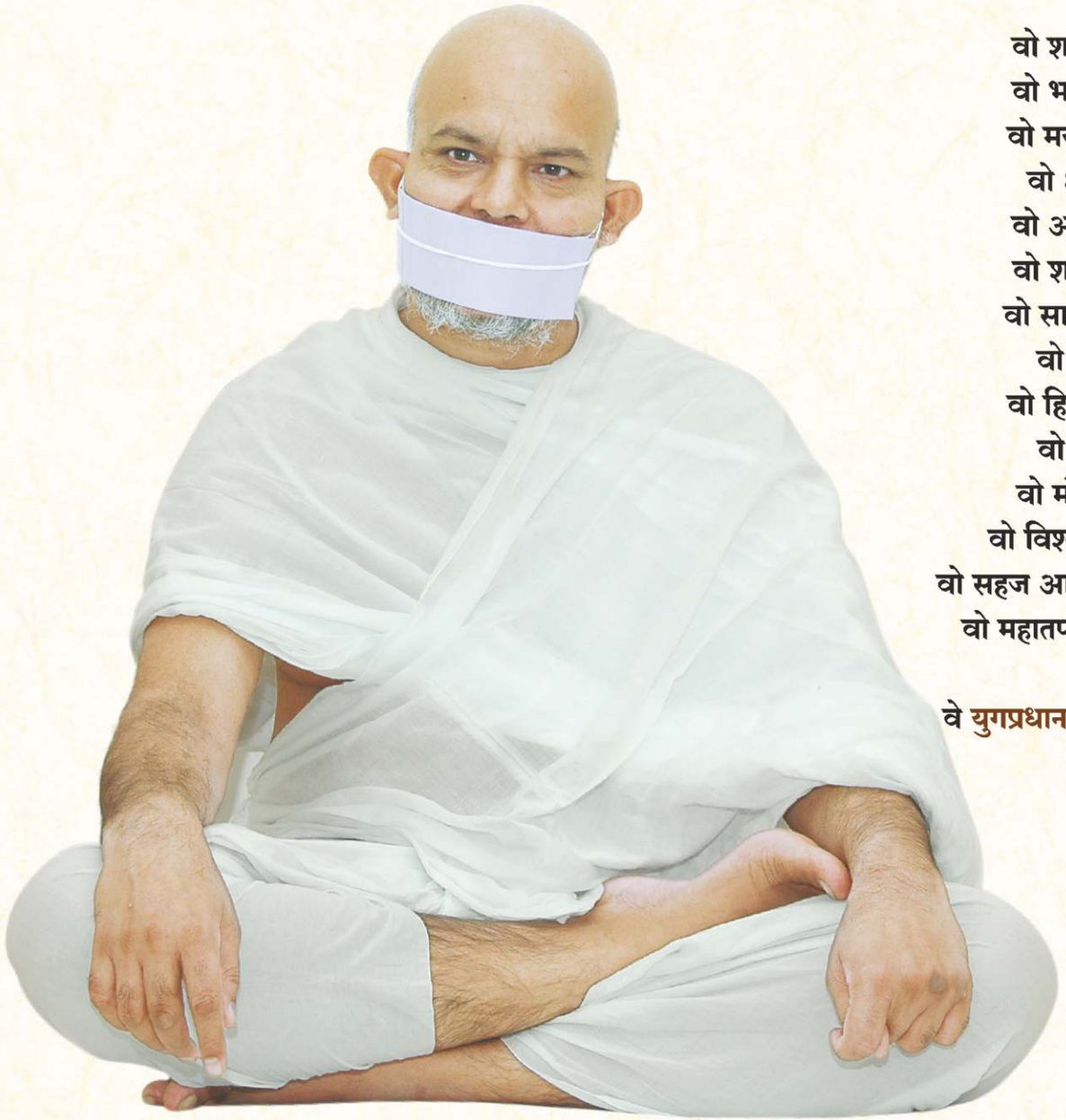

वो शक्ति है – वो विमुक्ति है
वो भक्ति है – वो अनुरक्ति है
वो मर्यादा है – वो आचार है
वो क्षमा है – वो कलाकार है
वो अभय है – वो अभ्युदय है
वो शान्ति है – वो सुकून है
वो साधना है – वो समाधान है
वो तेज है – वो ओज है
वो हिम्मत है – वो हौसला है
वो धर्म है – वो मर्म है
वो मंगल है – वो कल्याण है
वो विश्वास है – वो विकास है
वो सहज आनन्द है – वो परमानन्द है
वो महातपस्वी है – वो महामनस्वी है

इसलिए

वे युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी हैं

षष्टिपूर्ति

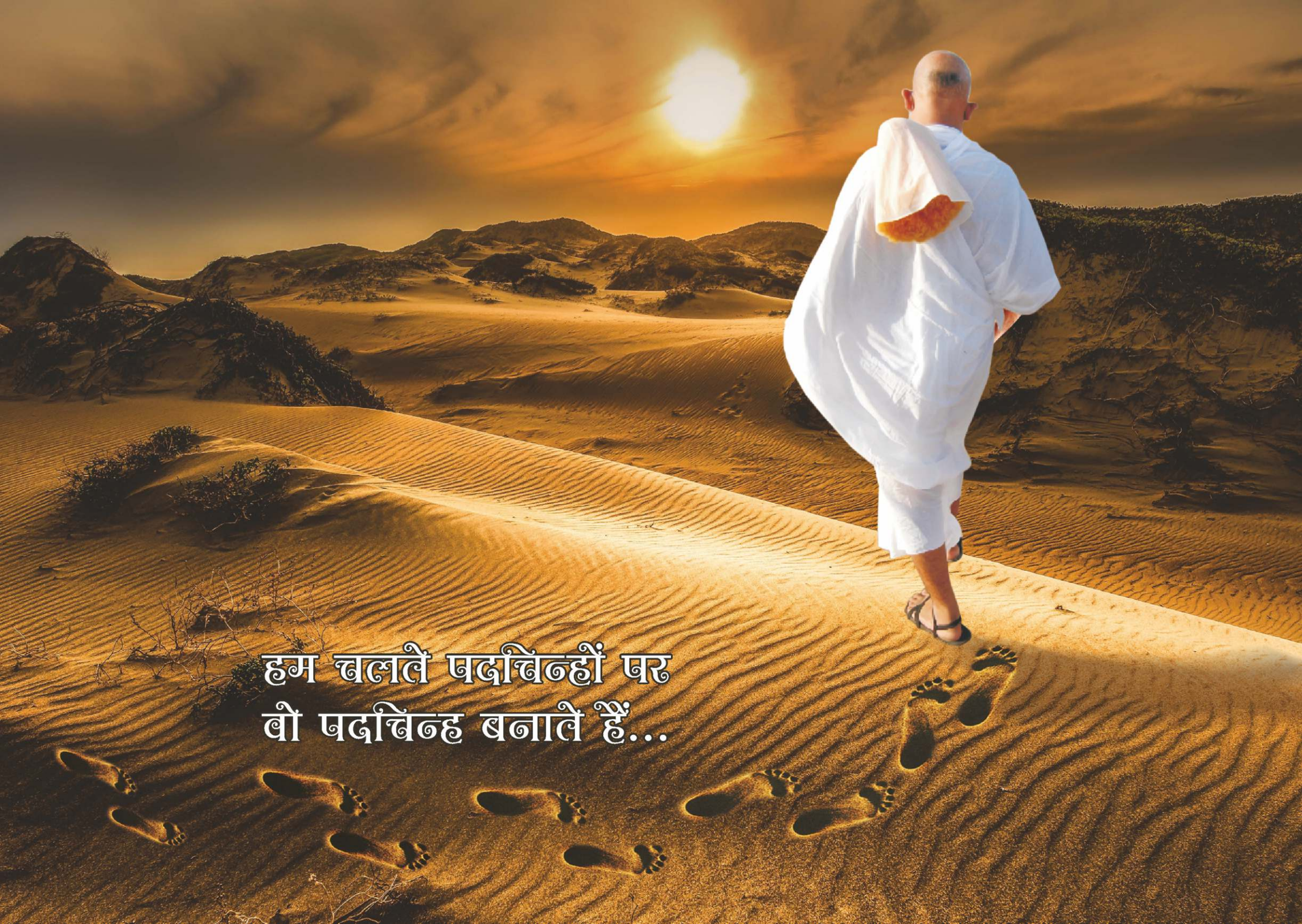
हम चलते पदचिन्हों पर
वो पदचिन्ह बनाते हैं...

आचार्य महाश्रमण

विराट व्यक्तित्व

आचार्य महाश्रमण भले जैन धर्म के बहुत बड़े सम्प्रदाय तेरापंथ के सर्वेसर्वा गुरु हैं, भले देश की नामचीन हस्तियां उनसे मार्गदर्शन लेने आती हैं, भले वे आठ सौ साधु–साध्वियों का नेतृत्व करते हैं, भले लाखों लोग उनके अनुयायी हैं, भले प्रतिदिन हजारों लोग उनके दर्शन के लिए उमड़ते हैं, भले उन्हें प्राचीन शास्त्रों का तलस्पर्शी ज्ञान है, भले वे संस्कृत, प्राकृत, अंग्रेजी, हिन्दी आदि भाषा के अधिकृत ज्ञाता हैं और भले उन्हें संस्कृत और प्राकृत के हजारों श्लोक कंठस्थ हैं, किन्तु उन्हें न तो अपने पद व ओहदे का अभिमान है और न ही अपने ज्ञान का।

'सादा जीवन, उच्च विचार' इस सूक्त के वे साक्षात् उदाहरण हैं। सादे सफेद वस्त्रों और साढ़े पांच फुट ऊंचे कद में बसा उनका विराट व्यक्तित्व दर्शक को बरबस अपनी ओर खींच लेता है। जहां पवित्र स्नेह, आशीर्वाद और पथदर्शन देने का प्रसंग होता है, वहां वे बड़े–छोटे का भेद नहीं करते। उनके दर्शन के लिए लगी लम्बी कतारों में अमीर–गरीब का भेद नहीं होता, लेकिन वृद्धों, दिव्यांगों आदि को उन कतारों में पहले रहने का अवसर अवश्य मिलता है।

एक संत महापुरुष होने के नाते सरकार, प्रशासन और जनता की ओर से उन्हें विशेष सम्मान और विशेष सुविधाएं देने का प्रयास किया जाता है, किन्तु वे सदा इनसे अलिप्त रहते हैं।

षष्टिपूर्ति

शुद्ध साधक

आचार्यश्री महाश्रमणजी उन महान संत–विचारकों में से एक है, जिन्होंने आत्मा के दर्शन को न केवल व्याख्यायित किया है, अपितु उसे जीया भी है। आप उच्च कोटि के साधक हैं। आपने साधुता के उच्च मूल्यों को सदैव वर्धमान रखा है। आपसे संतत्व की गरिमा वृद्धिंगत हुई है। आप स्थिरयोगी के रूप में विश्रुत हैं। श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित स्थितप्रज्ञ के आप साक्षात् उदाहरण है। यही कारण है कि आपके आभावलय में हर व्यक्ति असीम शांति और तृप्ति का अनुभव करता है।

आपका जीवन वैयक्तिक की अपेक्षा सामुदायिक अधिक है। तेरापंथ धर्मसंघ का कुशल नेतृत्व करते हुए आप हजारों की भीड़ के बीच भी सिद्ध साधक प्रतीत होते हैं। आपकी शांत और गांभीर्य से परिपूर्ण सौम्य मुखाकृति सतत् आत्मस्थता की द्योतक है। 'रहो भीतर, जीओ बाहर' इस सूक्ति को आपके जीवन में अनायास ही देखा जा सकता है। जनसंकुल और कोलाहलपूर्ण वातावरण में भी आपकी एकाग्रता बाधित नहीं होती।

लक्ष्य के प्रति सर्वात्मना समर्पण भाव ने आपकी साधना को पुष्टता प्रदान की है। जीवन की प्रत्येक क्रिया में संपृक्त आपका संयम प्रकृष्टता और वैशिष्ट्य लिए है। भारतीय ऋषि परम्परा की संवाहक आपकी साधना भावनैर्मल्य, आत्मानुशासन, पापभीरूता और आचार निष्ठा से समृद्ध है। अनुकूल और प्रतिकूल दोनों परिस्थितियों में आपकी समत्व की साधाना स्तुत्य है। आंतरिक तपस्या की प्रगाढ़ता के कारण आचार्यश्री महाप्रज्ञजी ने आपको 'महातपस्वी' के रूप में संबोधित किया।

अप्रमाद की साधना आपके जीवन में सहज ही सधी हुई है। ब्रह्म मुहूर्त के नीरव वातावरण में ध्यान–जप की साधना आपकी दिनचर्या का अभिन्न अंग है। दिन भर चलने वाले आयोजनों–कार्यक्रमों में सन्निधि प्रदान करते हुए भी आप कई घण्टे साधना के लिए निर्धारित रखते हैं।

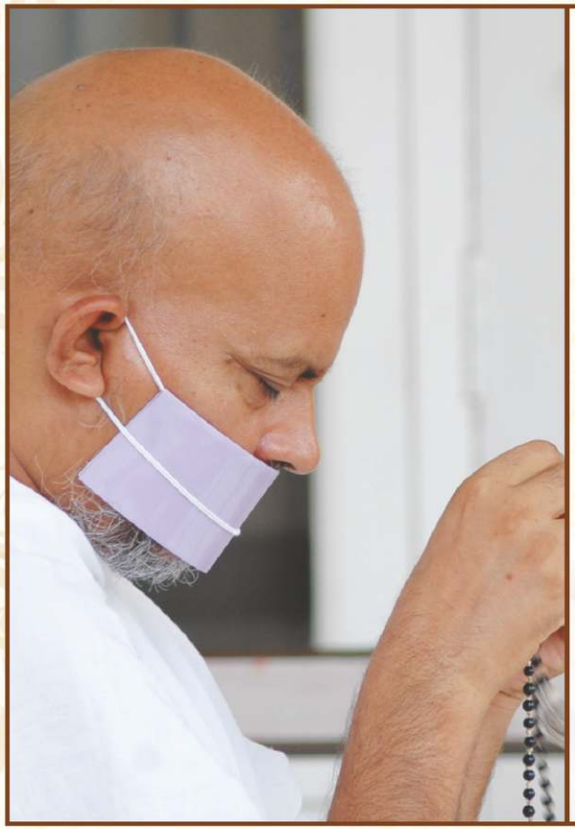
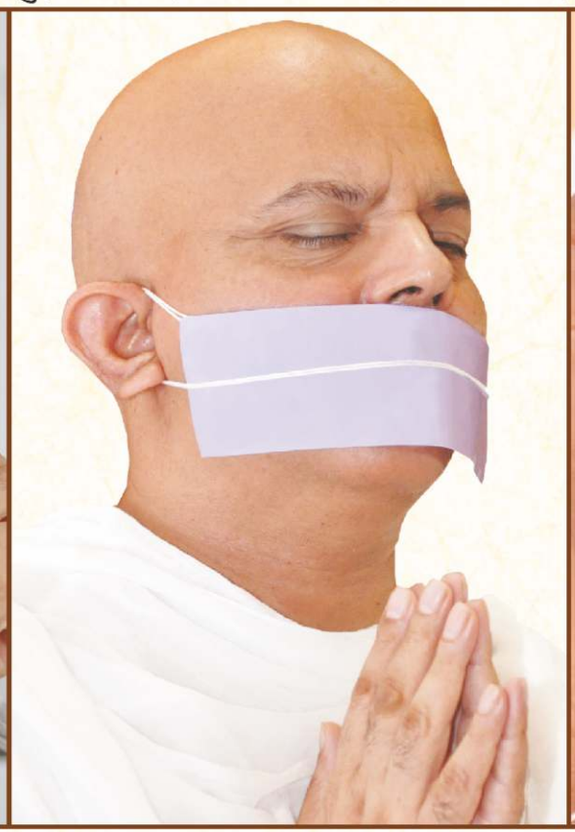

आचार्य महाश्रमण

विलक्षण मेधा

परम आचार कुशल, धर्मोपदेशक, धर्म धुरन्धर, बहुश्रुत, मेधावी... इन पवित्र शब्दों का उच्चारण करते हुए मन की वल्गा को मेधावी शब्द ने थाम लिया। मेधा और मेधावी पुरुष मानो विचार सदन में अतिथि बनकर प्रविष्ट हो गए। प्रश्न उठा मेधा क्या है? शब्दकोष ने समाधान दिया – धारण करने वाली बुद्धि अर्थात् सम्यक् स्मरण शक्ति मेधा है। जिसके पास अथवा जिनमें मेधा हो वह व्यक्ति मेधावी कहलाता है। तेरापंथ के एकादशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाश्रमणजी को एक उत्तम मेधावी के रूप में देखा जा सकता है। तर्क–कौशल एवं उच्चारण–कौशल के साथ अदुष्य स्मृति कौशल भी आपके महनीय व्यक्तित्व का एक विशिष्ट पर्याय है। असाधारण साध्वीप्रमुखाश्रीजी के शब्दों में आचार्यश्री महाश्रमणजी की स्मृति विलक्षण है। अनेक अवसरों पर अनेक रूपों में पूर्वस्मृति अनेक तथ्य एवं घटनाओं की आकर्षक अभिव्यक्ति श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर देते हैं। संस्कृत भाषा में अनगिन श्लोक, पूज्य तुलसी महाप्रज्ञ के चातुर्मास एवं मर्यादा महोत्सव स्थल तथा संवत्, साधु–साध्वी एवं समणी वर्ग के लगभग 700 से अधिक नाम, चतुर्विध धर्मसंघ संबंधित घटनाओं का उल्लेख प्रायः आपकी पावन रसना किसी ग्रन्थ–पत्र का आलम्बन लिए बिना अविकल रूप से कर देते हैं।

आप न केवल अतीत के स्मृत दृश्यों को सजीव अभिव्यक्ति देते हैं, अपितु श्रुत लेखन कार्यों में भी आपकी स्मृति वैशिष्टय उजागर होती है। महात्मा महाप्रज्ञ के पुस्तक के रचनाकार का प्रसंग। अन्यान्य कार्यों की व्यस्तता के कारण लेखन कार्य कई बार अवरुद्ध हो जाता। एक बार अंतराल लगभग ढाई महीने तक रहा। पुस्तक का श्रुत लेखन करने वाले साध्वी सुमतिप्रभाजी के अनुसार आचार्यप्रवर ने उसी पंक्ति के आगे लिखवाना प्रारम्भ किया जहां संभवतः 80 दिन पूर्व छोड़ा था। ऐसे अनुपम स्मृति वैभव के धारक आचार्य महाश्रमण जैसे मेधावी पुरुष ही हो सकते हैं। अन्यत्र ऐसी क्षमता का होना विरल अथवा असंभव प्रतीत होता है। तीन वर्ष पूर्व सम्पन्न केरल यात्रा के दौरान संस्कृत और अंग्रेजी भाषा में आपश्री के धाराप्रवाह वक्तव्य को देख–सुन कर चतुर्विध धर्मसंघ चकित रह गया। अनेक व्यक्तियों के मन में जिज्ञासा होगी कि आचार्यश्री ने इन भाषाओं में वक्तृत्व कौशल कैसे, कहां, कब प्राप्त किया? किसी भी भाषा में पढ़ना, लिखना, समझना अपेक्षाकृत आसान होता है, किन्तु धाराप्रवाह बोलना सामान्य बात नहीं है।

विद्यालय शिक्षा के दौरान यह भाषाएं आपके पाठ्यक्रम में शायद ही रही होगी और अगर थी भी तो प्रारम्भिक तौर पर ही रही होगी। यह आपकी स्फूर्त मेधा का ही कमाल है कि वर्षों पूर्व किया गया वह अभ्यास आज भी आपके भीतर सक्रिय रूप से अंतर्निहित है और अवसर आने पर दोनों भाषाओं में कुशलवेत्ता एवं वक्ता के रूप में आपको प्रतिष्ठापित कर देता है। भारतीय ज्ञानपीठ विद्यालय में मुख्य प्रवचन के उपरान्त आपके संस्कृत वक्तव्य को सुनकर जहां जनता एवं विद्यालय परिवार ने दांतों तले ऊंगली दबा ली, वहीं अनेक स्थलों पर अंग्रेजी भाषा को सुनकर श्रोताओं के मन–नयन प्रफुल्लित हो गए। संभवतः आचार्यप्रवर की तुलना में हमारी आंखें अधिक मात्रा में अक्षरों का स्पर्श करती है, हमारे कर्णयुगल आचार्यश्री की अपेक्षा संभवतः अधिक शब्दों का श्रवण करते हैं, किन्तु उनके जैसी धारण शक्ति के अभाव में हमारे लिए पाठन और श्रुत अंश को बताना जटिल हो जाता है।

षष्टिपूर्ति

शुभ अवतरण परमार्थहित हर्षित गगन वसुंधरा,
वैशाख नवमी पर्वतिथि अद्‌भुत अलौकिक रसभरा,
पितु–मातु धन्यः, गोत्र धन्यः धन्य भू सरदार की,
तत् शुभ समय विधि लेख अंकित महाश्रमण महाराज की
तत् शुभ समय विधि लेख अंकित महाश्रमण गुरुराज की।

आचार्य महाश्रमण

ईश्वर को नहीं, स्वयं को पाने की साधना

आचार्य महाश्रमण प्राचीन भारतीय ऋषि परम्परा के जीते–जागते उदाहरण हैं। उनकी साधना का उद्देश्य ईश्वर को नहीं, स्वयं को पाना है, अपनी आत्मा के पूर्ण शुद्ध रूप को पाना है। उन्होंने आत्मा के दर्शन के लिए स्वयं को सतत् लीन रखा है। वे साधना के लिए किसी कन्दरा, वन, आश्रम, एकान्त स्थान में नहीं जाते, हजारों लोगों की भीड़, कोलाहलपूर्ण वातावरण में भी उन्हें साधनालीन देखा जा सकता है। दुनिया में रहते हुए भी वे दुनियादारी से दूर हैं। बाहरी दुनिया में जीते हुए भी वे स्वयं के भीतर जीते आए हैं। 'रहो भीतर, जीओ बाहर' सूक्त उनमें मूर्तिमान है।

बारह वर्ष की आयु में संन्यास ग्रहण करने वाले आचार्य महाश्रमण यों तो प्रतिदिन तीन–चार घण्टे जप, ध्यान में लीन रहते हैं, किन्तु उनकी साधना काल की सीमा में बंधी हुई नहीं है, उनकी साधना चौबीसों घंटे चलने वाली साधना है। उनके सहज सौम्य आभामंडल में उनकी साधना की तेजस्विता के दर्शन होते हैं। परम पवित्रता, गहरी शांति और चिदानंद की खोज मानो आचार्य महाश्रमण के पास आकर सफल हो जाती है।

षष्टिपूर्ति

आचार्य महाश्रमण

कुशल अनुशास्ता

तेरापंथ धर्मसंघ की एक नेतृत्व की परम्परा में ग्यारहवें अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी की कुशल प्रशासक के रूप में विशिष्ट पहचान है। आपके अनुशासन में आत्मीयता और मृदुता के दर्शन होते हैं। अपने पुनीत चिन्तन और पुरुषार्थ के द्वारा आप तेरापंथ को निरन्तर विकासोन्मुख बनाए हुए हैं। जैन धर्म की एक विशिष्ट शाखा है – तेरापंथ। आचार्य श्री भिक्षु ने अठारहवीं शताब्दी में धर्म–क्रान्ति का शंखनाद किया, जो तेरापंथ के नाम से विख्यात है। पूर्ववर्ती दस आचार्यों की आध्यात्मिक सम्पदा आचार्य श्री महाश्रमणजी को विरासत में प्राप्त है। आपके साथ सैकड़ों समर्पित साधु–साध्वियों की फौज है, जो स्वयं कठोर साधना करती हुई, स्वयं कष्ट सहकर भी आपके निर्देशानुसार कष्टापतित मानवता के उत्थान का पुण्य कार्य कर रही है। समण श्रेणी भी आपके संदेश को देश–विदेश में प्रसारित कर रही है। विदेशों में अनेक केन्द्रों और विश्वविद्यालयों में अध्यापन के माध्यम से इस श्रेणी द्वारा भौतिकता के बीच अध्यात्म के प्रसार का महत्त्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा और उसके द्वारा अधिमानित देश–विदेश में फैली 525 से अधिक सभाओं के हजारों सदस्य आपके प्रत्येक इंगित को साकार करने हेतु कटिबद्ध हैं। आपके सक्षम आध्यात्मिक नेतृत्व में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल 50,000 सदस्यों वाली अपनी 500 से अधिक शाखाओं के साथ विभिन्न कार्य–योजनाओं और महिला सशक्तिकरण के द्वारा संस्कृति और संस्कारों को सुदृढ़ करने का भगीरथ प्रयास कर रही है। आपश्री का सिंचन पाकर महिला समाज पौरुष की मशाल थामे आगे की ओर सतत् अग्रसर है। आपके पावन पथदर्शन में 40,000 से अधिक युवकों की आध्यात्मिक सेना अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् अपनी 300 से अधिक शाखाओं के साथ विविध गतिविधियों द्वारा समाजोत्थान के कार्य में प्रयत्नशील है। आपका आशीर्वाद उनके आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार करता है।

आप जैसे गुरु को पाकर लाखों लोग धन्यता का अनुभव कर रहे हैं। आप उनकी आस्था के पावन तीर्थ है। आपका आध्यात्मिक संरक्षण उनका पथ प्रशस्त कर रहा है।

आचार्य महाश्रमण

प्रभावी प्रवचनकार

आचार्यश्री महाश्रमण एक ऐसे प्रवचनकार हैं, जो अपनी शांत, मृदु और गंभीर शैली से श्रोताओं के हृदय का स्पर्श करते हैं। आपके प्रवचन जीवन की मूलभूत और व्यक्तिगत समस्याओं से जुड़े होते हैं। जनता में इन प्रवचनों के प्रति आकर्षण सहज ही दिखाई देता है।

आप एक प्रभावी प्रवचनकार के रूप में प्रतिष्ठित हैं। आपके वक्तव्यों में साधना बोलती है। साधना की अग्नि में तप्त तथ्य श्रोता पर गहरा प्रभाव छोड़ता है। इसीलिए जहां बौद्धिक वर्ग आपके प्रवचन श्रवण के लिए आतुर रहता है वहीं ग्रामीण जनता में भी वह ललक निरन्तर बनी रहती है।

आपके प्रवचन सर्वजनहिताय होते हैं। जाति, वर्ग, क्षेत्र, सम्प्रदाय, राष्ट्र आदि किसी भी प्रकार का भेद इन प्रवचनों में परिलक्षित नहीं होता। श्रीमद्भगवद्गीता और बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद पर आपकी प्रलम्ब प्रवचनमाला में आपकी समन्वयवादिता को मुखर किया है। आपका मानना है कि ग्रन्थ, पंथ और संत भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, किन्तु उनका कथ्य और तथ्य एक ही है। यही कारण है कि हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, जैन, बौद्ध आदि विभिन्न धर्मावलम्बियों ने आपके उपदेश को आदर के साथ स्वीकार किया है।

आपके प्रवचनों के मूल आधार होते हैं - जैन आगम। जैनागमों में निबद्ध किसी सूत्र अथवा श्लोक को केन्द्र में रखकर संस्कृत, प्राकृत के श्लोंको, हिन्दी काव्य रचनाओं, कथाओं आदि के माध्यम से विषय को सहज और सरल भाषा में प्रतिपादित करते हैं। बीच-बीच में मधुर रागों से युक्त प्रेरणास्पद गीतों का संगान श्रोता को मंत्रमुग्ध कर देता है।

आप समय-समय पर आख्यानों आदि के द्वारा रोचकता के साथ महापुरुषों के जीवनवृत्त को न केवल जनता तक पहुंचाते हैं, अपितु उसके माध्यम से महापुरुषों के पदचिन्हों और आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित भी करते हैं।

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा सृजित साहित्य

- संवाद भगवान् से (भाग–1)
- संवाद भगवान् से (भाग–2)
- 18 पाप
- आओ हम जीना सीखें
- सुखी बनो
- संपन्न बनो
- विजयी बनो
- शिलान्यास धर्म का
- दुःख मुक्ति का मार्ग
- क्या कहता है जैन वाङ्मय
- परम सुख का पथ
- निर्वाण का मार्ग
- रोज की एक सलाह
- भिक्षुवाणी
- अदृश्य हो गया महासूर्य
- शेमुषी
- शिक्षा सुधा
- धर्म है उत्कृष्ट मंगल
- सपर्या मेरे गीत
- महात्मा महाप्रज्ञ
- विकास पुरुष ऋषि हेम
- आचार्य भिक्षु की अनुशासन शैली
- अंतिम मनोरथ : अनशन
- भगवान ने कहा
- उठो शिष्य
- तीन बातें ज्ञान की
- आचार्य भिक्षु : आख्यान साहित्य भाग–1
- आचार्य भिक्षु : आख्यान साहित्य भाग–2
- तेरापंथ इतिहास और दर्शन
- अणुव्रत विशारद
- Thus Spoke Mahaveera
- Insight

अक्षर जो शब्द, शब्द जो पृष्ठ, पृष्ठ जो किताबों के सांचे में ढलकर
सुखी जीवन जीने का दिशाबोध देते हैं।

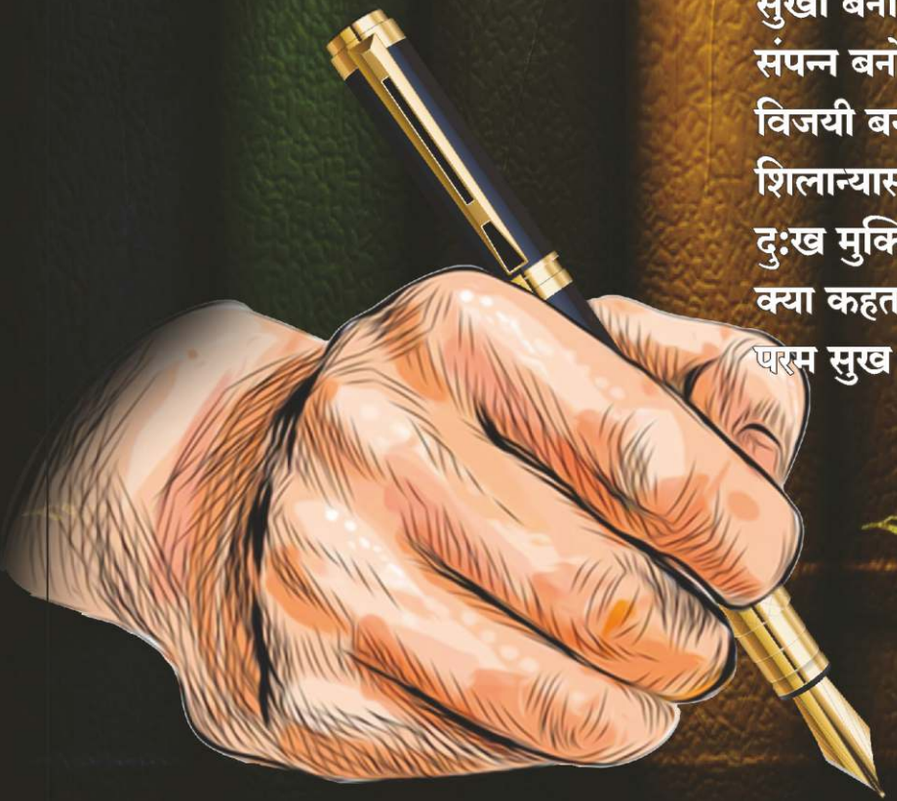

आचार्य महाश्रमण

सृजनशील साहित्यकार

भारत की पवित्र वसुन्धरा ने अमूल्य सन्त साहित्यकारों को प्रस्तुत किया। देश के चारित्रिक उत्थान में उनका तप:पूत दिशादर्शन और अविश्रान्त श्रम रहा है। अपने निष्णात चिन्तन के द्वारा उन्होंने मानव जाति का महान पथदर्शन किया। उन महान विभूतियों की महनीय शृंखला में एक नाम है – आचार्यश्री महाश्रमण।

आपकी बहुमुखी क्रियाशीलता में साहित्य सृजन का भी प्रमुख स्थान है। अपनी मनीषा और विद्वता के द्वारा आप साहित्य जगत की सेवा कर रहे हैं। जैनागमों के सम्पादन का गुरुत्तर कार्य आपके कुशल नेतृत्व में गतिमान है। यह कार्य आपके करणीयों की सूची में वरीयता लिए है। आपके श्रमसाध्य सम्पादन से निष्पन्न जैन पारिभाषिक शब्दकोश विद्वज्जगत को एक महत्त्वपूर्ण देन है। तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु द्वारा राजस्थानी भाषा में प्रणीत ग्रन्थों के संपादन के द्वारा आप राजस्थानी साहित्य के संरक्षण में अपनी महती भूमिका निभा रहे हैं।

मौलिक और नवीन विचारों से युक्त आप द्वारा सृजित साहित्य पाठकवर्ग का सुन्दर पथदर्शन करता है। सरल भाषा और गहरा हार्द लिए आपकी कृतियां पाठकों की समस्याओं के समाधान में उपयोगी सिद्ध हो रही है।

आओ हम जीना सीखें, दु:ख मुक्ति का मार्ग, संवाद भगवान से, क्या कहता है जैन वाङ्मय, सुखी बनो, संपन्न बनो, विजयी बनो, रोज की एक सलाह, शिलान्यास धर्म का आदि आपकी महत्त्वपूर्ण कृतियां है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के आद्योपान्त जीवनवृत्त को आपने 'महात्मा महाप्रज्ञ' नामक कृति में प्रभावकता के साथ प्रस्तुत किया।

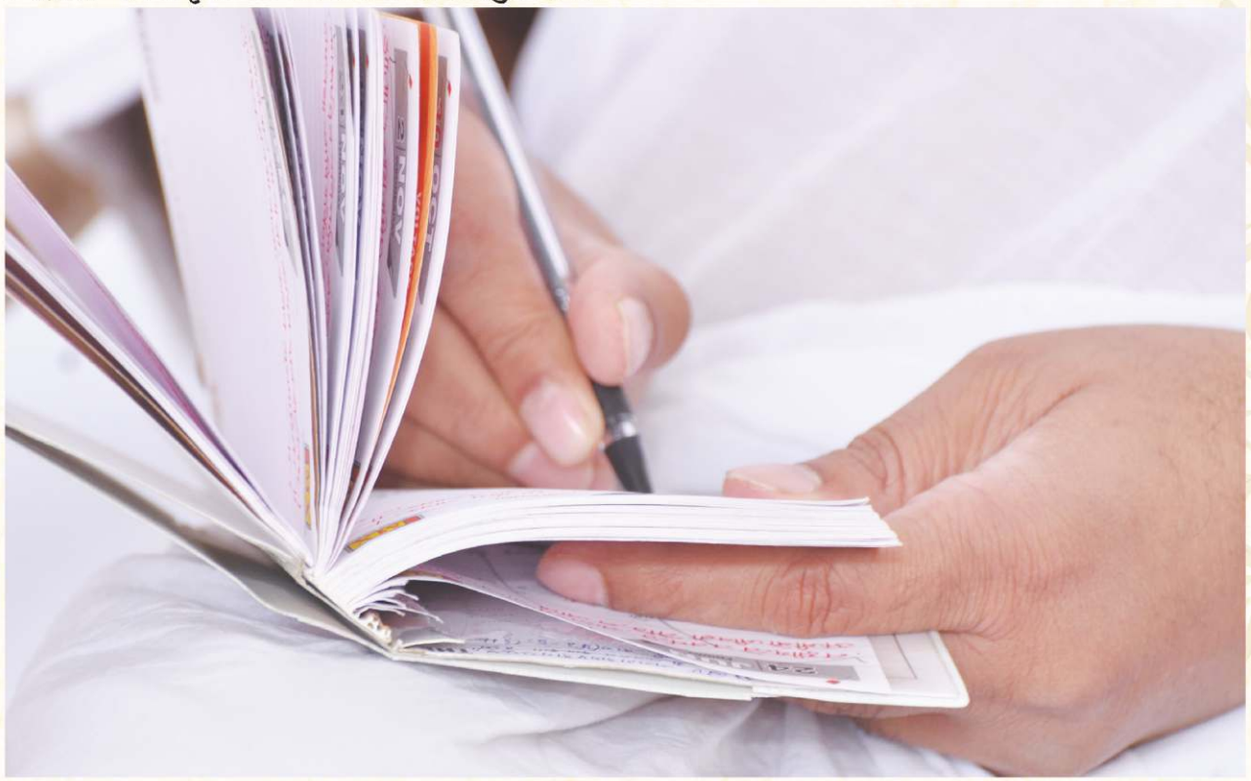

षष्टिपूर्ति

कुशल समाज सुधारक

स्वस्थ समाज की संरचना के लिए आचार्य श्री महाश्रमणजी सतत् प्रयत्नशील हैं। स्व–कल्याण के साथ पर–कल्याण आपके जीवन का अभिन्न व्रत है। इस व्रत की अनुपालना के लिए आप स्वयं को पूर्णरूपेण समर्पित किए हुए हैं। सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं के समाधान में आपकी समाधायक चेतना सदैव जागरूक रहती है।

सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों और रूढ़ धार्मिक कर्मकाण्डों पर आप तीखे प्रहार करते हैं। आपका स्पष्ट मंतव्य है – 'जो समाज रूढ़िगत और मिथ्या विश्वासों से जकड़ा होता है, जिस समाज के नेता उसके विकास और परिष्कार के लिए चिन्तनरत नहीं रहते, वह समाज वस्तुतः समाज नहीं समज (पशुओं का समूह) बन जाता है और जो धर्म जीवन में रूपान्तरण नहीं लाता, शान्ति प्रदान नहीं करता, वह धोखा है। धर्म मानव व्यवहार में प्रतिष्ठित होना चाहिए।'

समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, जातिवाद, धोखाधड़ी, नशा, दहेज, भ्रूणहत्या आदि विसंगतियों के परिष्कार के लिए आप अनवरत प्रयासरत हैं। पदयात्राओं के दौरान लाखों लोगों को आपने कई प्रकार के संकल्प कराए हैं। अहिंसा, अनुकंपा, शान्ति और नैतिकता की प्रतिष्ठापना के द्वारा आप सामाजिक स्वस्थता के लिए अविराम परिश्रम कर रहे हैं। नशामुक्ति के लिए आपकी अभिप्रेरणा से जागृत होकर एक करोड़ से अधिक लोगों ने नशामुक्ति का संकल्प स्वीकार कर स्वस्थ जीवन शैली की ओर चरणन्यास किया।

असम के कार्बिआंग्लोंग की यात्रा के दौरान एक व्यक्ति अपने हाथ में बंदूक लिए आचार्यश्री के सम्मुख उपस्थित हुआ और नमन कर बोला – 'गुरुजी! मैंने आज तक सौ से ज्यादा लोगों को मौत के घाट उतार दिया है। आज जब आपको देखा तो ऐसा लगा कि मैंने बहुत पाप किए हैं, मेरा मन ग्लानि से भर गया है। मैं आपके सामने प्रतिज्ञा करता हूं कि अब मैं किसी की भी हत्या नहीं करूंगा।'

आचार्य महाश्रमण

एक करोड़ से अधिक कराए नशामुक्ति के संकल्प

कई भावाभिभूत लोग आचार्यश्री को दक्षिणा देने के लिए नोट लेकर पहुंच जाते, कोई फल, भोजन आदि लेने का आग्रह करता। कोई व्यक्ति तो आचार्यश्री को भेंट करने के लिए सोने का हार ले आया और किसी ने आश्रम बनाने के लिए जमीन देने की भावना प्रकट की। आचार्यश्री ऐसे लोगों को कहते हैं कि हम अकिंचन साधु हैं, हमने घर–बार, रुपया–पैसा छोड़ दिया, इसलिए नोट नहीं चाहिए। हमें चुनाव नहीं लड़ना, इसलिए वोट भी नहीं चाहिए। हमें कोई आश्रम–मठ नहीं बनाना, इसलिए प्लॉट भी नहीं चाहिए। हमें ऐसे ही सूती कपड़ों में रहना है, इसलिए कोट भी नहीं चाहिए। आपको हमें कुछ देना ही है तो नोट, वोट, प्लॉट, कोट नहीं, अपने जीवन की खोट दे दो।'

आचार्य महाश्रमण की साधनायुक्त वाणी का प्रभाव ही मानें कि लोग अपनी वर्षों पुरानी नशे की लत को एक झटके में छोड़ देते हैं। अब तक एक करोड़ से भी ज्यादा लोग आचार्यश्री की प्रेरणा से नशामुक्ति का संकल्प ग्रहण कर चुके हैं। शराब पीकर परिवार और गलियों में उत्पात मचाने वाले कई लोगों ने आचार्यश्री से नशामुक्ति की प्रतिज्ञा स्वीकार कर अच्छे इंसान के रूप में अपनी पहचान बनाई। कितने ही लोगों ने बीड़ी के बंडल व गुटखा, खैनी के पैकेट्स तोड़कर आचार्यश्री के चरणों में चढ़ा दिए।

आचार्य महाश्रमण बालपीढ़ी में संस्कार निर्माण पर बहुत बल देते हैं, उन्होंने अब तक हजारों विद्यालयों में जाकर लाखों–लाखों विद्यार्थियों को नशे के नुकसानों को समझाकर उन्हें जीवनभर के लिए नशा न करने की प्रतिज्ञा दिलाई है।

अहिंसा यात्रा के दौरान भी लाखों लोग सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्प ग्रहण कर इंसानियत की राह पर चल पड़े हैं। आदिवासी अंचलों की यात्राओं में जनजाति के कितने ही लोग आचार्यश्री से प्रेरित होकर शिकार व मांस का परित्याग कर चुके हैं।

इसी प्रकार समाज में व्याप्त अन्य बुराइयों और मनुष्य की दुर्वृत्तियों के परिष्कार के लिए आचार्यश्री अनवरत प्रयत्नशील हैं। वे बल प्रयोग में विश्वास नहीं करते। उनका मानना है कि हृदय परिवर्तन के द्वारा ही इंसान को सही अर्थों में इंसान बनाया जा सकता है।

आचार्य महाश्रमण

कश्मीर से कन्याकुमारी तक ससंघ यात्रा

आगमों में साधु के लिए एक विशेषण आता है 'परिव्राजक' अर्थात् पांवों से चल कर यात्रा करने वाला। युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी उत्तर से चलकर दक्षिणी छोर पर जन–कल्याण हेतु पधारे। आकाश का सूर्य तो सिर्फ पूर्व से पश्चिम की यात्रा करता है पर जिनशासन के इस महासूर्य ने तो अपने कदमों से पूरे धर्मसंघ के साथ भार के लगभग चारों दिशाओं को अपने पावन चरणों से पवित्र किया है। अहिंसा यात्रा के माध्यम से आपने हजारों गांवों, कस्बों और शहरों का प्रवास करते हुए जन–प्रतिबोध दिया है। परिव्राजक की भूमिका में आपने लाखों लोगों पर उपकार किया है। करुणा, दया और परोपकार की भावना से आपके कदमों में सदैव त्वरा बनी रहती है।

अर्द्ध सदी के अंतराल के पश्चात् अपने गुरु के चरण चिन्हों का अनुसरण करते हुए आप चतुर्विध धर्मसंघ के साथ कन्याकुमारी पधारे। भारत के अन्तिम छोर पर जब समुद्र किनारे आपश्री द्वारा प्रवचन हुआ तब ऐसा लगा मानो समुद्र की लहरें उछाल मार कर अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रही है। अपकाय के जीव भले मंद चेतना वाले होते हैं पर उनकी अव्यक्त स्मृति तेज होती है। उन्होंने भी आपकी करुणा, निर्मलता, ऋजुता और मृदुता को सलाम किया। जन–जन का कल्याण करने वाली अहिंसा यात्रा ने आपके पौरुष का परचम फहराया है।

विदेश धरा पर प्रथम प्रवास

अनेक कीर्तिमान स्थापित करने वाले आचार्य महाश्रमणजी ने विदेश यात्रा कर एक नव–इतिहास का सृजन कर तेरापंथ धर्मसंघ को विश्वपटल पर प्रकाशमान किया। नेपाल के बीरगंज क्षेत्र को आचार्यप्रवर के प्रथम विदेशी प्रवास का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बीरगंज से काठमांडू तक की अविस्मरणीय यात्रा एवं तत्पश्चात् नेपाल के बिराटनगर क्षेत्र में आचार्यप्रवर के अनूठे चातुर्मास ने एक नए अध्याय का सृजन किया। प्रतिकूल राजनैतिक परिस्थितियों एवं चातुर्मास काल में लगभग बंद के बावजूद भी तेरापंथ धर्मसंघ के अधिशास्ता के प्रति श्रद्धा प्रगाढ़ ही हुई एवं श्रद्धालुओं को किंचित् मात्र भी कष्ट नहीं पहुंचा। आवागमन के साधनों की समस्या के उपरान्त भी अनेकानेक श्रद्धालु गुरु के श्रीचरणों में पहुंच लाभान्वित हुए। तेरापंथ धर्मसंघ में प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय चातुर्मास बिराटनगर में कर आचार्यप्रवर ने स्वर्णाक्षरों में तेरापंथ धर्मसंघ की धर्म प्रभावना को अंकित किया।

आचार्य महाश्रमण

परोपकार के लिए 50000 कि.मी. की पदयात्रा

पश्चिम में कच्छ तो पूर्व में काजीरंगा, उत्तर में काठमांडू तो दक्षिण में कन्याकुमारी इस प्रकार भारत का कोना–कोना ही नहीं, विदेशी धरती भी महर्षि महाश्रमण के पदस्पर्श से पावन बन चुकी है। उन्होंने अब तक महात्मा गांधी की दांडी यात्रा से सवा सौ गुना ज्यादा और पृथ्वी की परिधि से सवा गुना अधिक पैदल सफर तय कर लिया है। उनका मानना है कि पदयात्रा एक ऐसा जरिया है, जिसके द्वारा न केवल शहरी और ग्रामीण जनता से रूबरू हुआ जा सकता है, अपितु उन्हें जीने की राह भी दिखाई जा सकती है और उनके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन भी लाया जा सकता है। एक बार केरल की यात्रा में एक ईसाई शिक्षण संस्थान में शिक्षा प्राप्त करने आए प्रशिक्षु ने आचार्य महाश्रमण से पूछ लिया– 'आज मीडिया का युग है। आप अपना संदेश मीडिया के माध्यम से पहुंचा सकते हैं, उसके लिए इतनी कष्टपूर्ण यात्रा की क्या आवश्यकता?'

आचार्यश्री ने मुस्कुराते हुए उससे प्रतिप्रश्न किया – 'तुम यहां क्यों आए हो?'

प्रशिक्षु ने कहा– 'मैं प्रीस्ट बनने की शिक्षा ग्रहण करने आया हूं।'

आचार्यश्री ने पूछा– 'क्या यह शिक्षा मीडिया के माध्यम से प्राप्त नहीं की जा सकती थी? उसके लिए यहां आने और रहने की क्या आवश्यकता?'

प्रशिक्षु ने कहा – 'यहां हम फादर के पास अध्ययन करते हैं। उनके सीधे सम्पर्क में रहने से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं।'

आचार्यप्रवर ने कहा –'हम भी यही कहना चाहते हैं कि मीडिया के माध्यम से लोगों से सीधा सम्पर्क नहीं हो पाता। सीधे सम्पर्क से लोगों में ज्यादा बदलाव आ सकता है। उसके माध्यम से व्यक्ति अपनी जिज्ञासाओं का समाधान भी आसानी से प्राप्त कर सकता है। पदयात्रा के द्वारा आम जनता से सहज मिलना हो सकता है तथा उन्हें कुछ बताया भी जा सकता है। और तो क्या यदि हम मीडिया में रहते तो तुमसे मिलना कैसे होता?' आचार्यश्री की तर्कसंगत बात उस प्रशिक्षु के गले उतर गई। आचार्यश्री से प्रेरित होकर उसने और उसके साथी छात्रों ने मद्यपान न करने का संकल्प ग्रहण किया।

आचार्य महाश्रमण

संयम साधना में आरोहित होते कदम

12

वय में दीक्षा

27

वय में महाश्रमण पद

35
वय में युवाचार्य
48
वय में आचार्य
60
वय में युगप्रधान

हे महाश्रमण!
नई भोर का अभिनन्दन लो
पवन पुरवई का वन्दन लो
जीवन यह शीतल शशधर सा
श्रद्धासिक्त भक्ति चन्दन लो

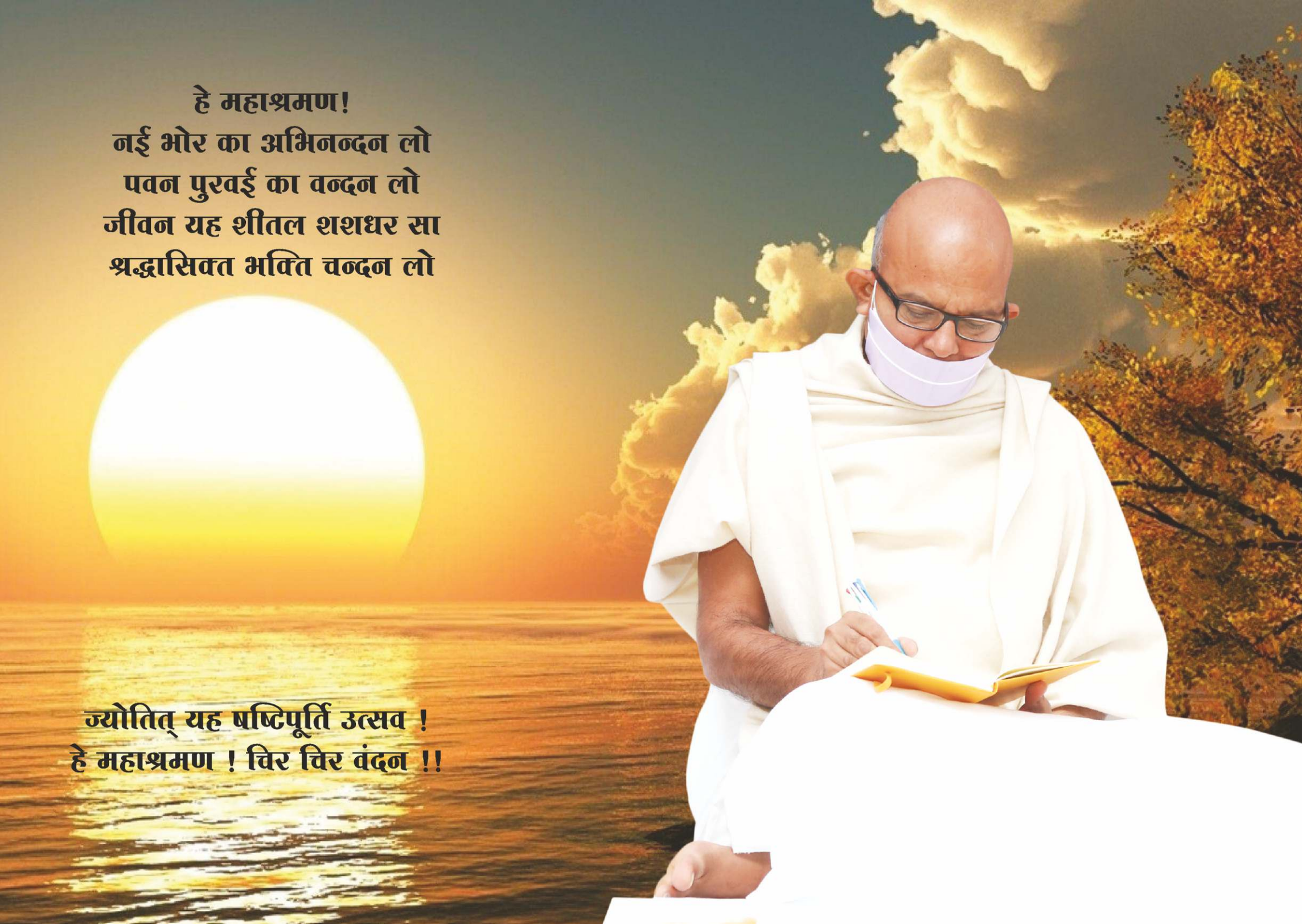

ज्योतित् यह षष्टिपूर्ति उत्सव !
हे महाश्रमण ! चिर चिर वंदन !!

आचार्य महाश्रमण

खतरों से बेखौफ

एड़ी से चोटी तक पसीने से नहलाने वाली गर्मी हो या चोटी से एड़ी तक कंपाने वाली कड़कड़ाती ठंड, डाकुओं, नक्सलियों आदि के निवास स्थल बने हुए भयावह पर्वतीय क्षेत्र हों या हिंस्र पशुओं के आवास स्थल वन, दिल को बहलाने वाला बागान, खेत, खलिहान हों या दिल को दहलाने वाली मेघ गर्जना और वज्रपात, पृथ्वी ही नहीं जन–जन के हृदय को हिलाने वाला भूचाल हो या गंतव्य की प्रतिकूल दिशा में लौटने को विवश करने को उद्यत तीव्र तूफान, आचार्य महाश्रमण इन सभी प्राकृतिक और स्थानगत प्रतिकूलताओं की परवाह किए बिना अनवरत यात्रायित हैं। ऐसे न जाने कितने–कितने प्रसंग होंगे, जब आचार्य महाश्रमण को उनके गंतव्य क्षेत्रों और वहां की स्थिति की भयावहता से अवगत कराते हुए वहां न जाने की सलाह दी गई अथवा वाहन प्रयोग करने का परामर्श दिया गया, लेकिन खौफनाक खतरे, चुनौतियां और कठिनाइयां इस महापुरुष को न कभी डरा पाए और न ही रोक पाए। इसीलिए मंजिल हमेशा उनके चरण चूमती गई।

छत्तीसगढ़ में तो आचार्य महाश्रमण ने बस्तर अंचल की ही यात्रा अधिक की, जहां का चप्पा–चप्पा मानों नक्सलवाद के इतिहास और वर्तमान को बयां करता है। बारुदी सुरंग, गोलीबारी, बम विस्फोट वहां के लिए आम बात है। असम के कार्बिएंग्लोंग, जहां लोग दिन में भी जाने से भय खाते हैं, वहां आचार्य महाश्रमण ने कई रातें गुजारी और वहां के वाशिंदों को सन्मार्ग पर चलने की प्रतिज्ञाएं करवाई।

भूकम्प ने नेपाल में अपना विकराल तांडव दिखाया, उस समय आचार्यश्री भी काठमांडू में थे। आचार्यश्री का वहां पच्चीस दिन और रुकना पहले से निश्चित था, पर बार–बार आ रहे भूकम्प के झटकों को देखते हुए आचार्यश्री के लाखों अनुयायी ही नहीं, भारत के दिग्गज लोग भी आचार्यश्री को भारत वापस आने का अनुरोध करने लगे। यहां तक की भारत की तत्कालीन विदेश मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने आचार्यश्री के विशेष वायुयान की व्यवस्था कर दी, लेकिन आचार्यश्री ने अपने कार्यक्रम में बदलाव करने और वायुयान का उपयोग करने से इंकार कर दिया। संकट के समय नेपाली जनता और वहां की सरकार और प्रशासन को भी संबल दिया।

आचार्यश्री ने पाकिस्तान से सटे भारत के सीमान्त प्रदेशों की यात्रा तब की, जब कारगिल युद्ध को मात्र कुछ ही समय हुआ था। दोनों देशों में पारस्परिक तनाव अपने चरम पर था, किन्तु आचार्यश्री बेखौफ मानवता के समुत्थान के लिए प्रयत्न करते रहे। सरहद पर जाकर भारतीय जवानों को संबोधित भी किया। आचार्य महाश्रमण गुरुद्वय की आध्यात्मिक संपदा के वंदनीय संवाहक हैं। गुरुद्वय द्वारा निखारे गए आचार्य महाश्रमण उनके सपनों और मानवता को समर्पित उनके अधूरे कार्यों को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए कृतसंकल्प हैं। यह महर्षि अपनी साधना, अपने ज्ञान, अपने साहित्य और अपने पुरुषार्थ से संसार को आध्यात्मिक उजाला बांट रहा है। परमार्थ को समर्पित आचार्य महाश्रमण का जीवन सदैव वंदनीय है।

अखण्ड परिव्राजक

आचार्यश्री महाश्रमणजी 'विहारचर्या इसिणं पसत्था' इस आगमिक मंत्र को चरितार्थ कर जनकल्याण के लिए गांवों, कस्बों, नगरों और महानगरों में पदयात्रा करते हुए नई जागृति का संचार कर रहे हैं।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि देशाटन आपके प्रिय कार्यों में एक है। क्योंकि आप इसे परोपकार का सशक्त साधन मानते हैं। आचार्यश्री महाश्रमण की गणना उस महान धर्मनायकों और संतों में है, जो केवल धर्मोपदेश देने में ही अपने कर्तव्य की इतिश्री नहीं करते अपितु जनकल्याण की भावना से ओत–प्रोत होकर स्वयं को जनसेवा की साधना में समर्पित कर देते हैं।

अब तक राजस्थान, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, दिल्ली, मध्यप्रदेश, बिहार, असम, नागालेण्ड, मेघालय, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, ओड़िशा, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, पुदुचेरी, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, छत्तीसगढ़ आदि की भूमि इस महापुरुष के चरण स्पर्श से पावन बनी है। विदेश में नेपाल और भूटान को भी आपने पदयात्रा के द्वारा पावन किया है। 52,000 कि.मी. से अधिक पदयात्रा करने के बाद भी आपका उत्साह नवीनता लिए हुए है। आपकी गति त्वरता इसका सबल साक्ष्य है। ऊबड़–खाबड़ पथरीले और कंटकाकीर्ण मार्ग की परवाह किए बिना आप निरंतर यात्रायित हैं।

आचार्य महाश्रमण

सम्प्रदाय के गुरु पर विचार सम्प्रदायातीत

आचार्य महाश्रमण भले जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ नामक संप्रदाय के ग्यारहवें गुरु हैं, किन्तु उनके विचार सम्प्रदाय की सीमाओं से जकड़े हुए नहीं हैं। वे कहते हैं –'सच्ची और अच्छी बात किसी ग्रन्थ, किसी पंथ और संत से मिले स्वीकार कर लो। इतना ही नहीं, एक जैनाचार्य होते हुए भी उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता और बौद्ध ग्रन्थ धम्मपद पर सैंकड़ों प्रवचन किए हैं और उन प्रवचनों पर आधारित उनकी पुस्तकें बहुचर्चित और लोकप्रिय भी रही हैं। उनके असाम्प्रदायिक विचारों का ही प्रभाव है कि वे जहां जाते हैं, विभिन्न जातियों, सम्प्रदायों, वर्गों आदि के लोग उनकी एक झलक पाने के लिए उमड़ आते हैं। बिहार जैसे प्रदेशों में हजारों लोग कई किलोमीटर पैदल चलकर भी आचार्यश्री के दर्शन हेतु पहुंच जाते थे। टीवी चैनलों पर प्रतिदिन प्रसारित होने वाले उनके प्रवचनों को विभिन्न सम्प्रदायों के लोग आदर के साथ सुनते हैं। इन सबके बावजूद धर्मान्तरण उनका लक्ष्य कभी नहीं रहा। पूर्वोत्तर भारत की यात्रा के दौरान एक मुस्लिम व्यक्ति ने आचार्यश्री से पूछा –'आप कन्वर्ट करने (मुस्लिम से जैन बनाने) आए हैं क्या?' आचार्यश्री ने उससे कहा – 'हम धर्म कन्वर्ट करने नहीं, अपितु दिल को कन्वर्ट करने आए हैं। हम अभी अहिंसा यात्रा कर रहे हैं। सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति हमारा मिशन है। यह तो इंसानियत का कार्य है। यदि आप भी चाहें तो इस मिशन से जुड़ सकते हैं। इस कार्य के लिए जैनी होना जरूरी नहीं है।' आचार्यश्री कहते हैं – 'कोई जैन बने या नहीं, गुडमैन अवश्य बने।' उनके असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण के कारण उन्हें सदा सबकी सद्भावना ही प्राप्त होती रही है।

उत्तर प्रदेश की यात्रा के दौरान आचार्यश्री महाश्रमण कानपुर में जिस मार्ग से प्रवेश कर रहे थे, उससे जाने के लिए पुलिस रोकने लगी कि वह बहुत संवेदनशील क्षेत्र है। वहां सम्प्रदाय विशेष के लोग ज्यादा रहते हैं और कानपुर में दंगों की शुरुआत वहीं से होती है। आचार्यश्री ने समझाते हुए कहा – 'हमारी सभी सम्प्रदायों के साथ मैत्री है और हम तो अहिंसा यात्रा में सद्भावना की बात कर रहे हैं, इसलिए हमें उन लोगों से क्या भय?' आखिर आचार्यश्री उसी रास्ते से गए और मार्ग में वहां के वाशिंदों ने आचार्यश्री और अहिंसा यात्रा का उत्साह के साथ स्वागत किया। इस प्रकार उस संवेदनशील इलाके में भी सद्भाव के फूल खिल उठे।

आचार्य महाश्रमण नेपाल की यात्रा कर रहे थे। वहां के तीस से अधिक राजनीतिक दलों ने त्रिदिवसीय नेपाल बंद का आह्वान किया और उसके पालन के लिए वे कुछ कठोर बर्ताव भी कर रहे थे। आचार्यश्री वहां से अपनी अहिंसा यात्रा लेकर निकले तो उन लोगों ने आचार्यश्री को घेर लिया। लेकिन घेरने के पीछे उनका उद्देश्य विरोध नहीं, अपितु आचार्यश्री का स्वागत करना था। किसी स्थान पर सड़क जाम करने वाले लोगों ने आचार्यश्री के पदार्पण से पूर्व सड़क को धोकर साफ किया तो कहीं आगन्तुकों पर पत्थर बरसाने वाले हाथों ने अहिंसा यात्रा के यात्रियों का पानी, चाय, रस आदि के द्वारा आतिथ्य किया।

बिहार के जोकीहॉट में आचार्य महाश्रमण रामजानकी मंदिर में रुके। प्रवचन सुनने के लिए उमड़ी भारी भीड़ में मुस्लिमों की बड़ी संख्या में उपस्थिति देखकर पुजारी बोले– 'यहां सत्संग तो बहुत होते हैं, किन्तु यह पहला प्रसंग है कि मुस्लिम प्रवचन भी सुनने आए हैं और व्यवस्थाओं में सहयोग भी कर रहे हैं। कई शहरों/गांवों में आचार्यश्री के प्रवास के दौरान मुस्लिम लोगों के प्रयास से शराब व मांस की दुकानें, बूचड़खानें आदि बंद रहे।

आचार्य महाश्रमण संभवतः पहले जैनाचार्य हैं, जिन्होंने बौद्ध धर्मप्रधान भूटान के मुख्यद्वार से भव्य जुलूस के साथ प्रवेश किया। बौद्ध लामाओं ने दस हजार मंत्रों का उच्चारण कर आचार्यश्री का स्वागत किया। भाषायी कट्टरता के लिए विख्यात भारत के दक्षिणी प्रदेशों में भी आचार्यश्री के हिन्दी प्रवचनों को सुनने के लिए जनता का सैलाब उमड़ता।

षष्टिपूर्ति

अहिंसा यात्रा

आज के समय में व्यष्टि से लेकर समष्टि तक प्रत्येक व्यक्ति, व्यवस्था, समाज और राष्ट्र अनेक विभीषिकाओं से गुजर रहे हैं। वैचारिक आग्रह, असहयोग, अनैतिकता और परस्पर वैमनस्य आधुनिक युग की मूल समस्याओं के रूप में उभर रही है। ऐसे समय में एक संत द्वारा 52,000 किलोमीटर से भी अधिक पदयात्रा करके मानव कल्याण का संदेश देना अत्यंत समीचीन है। जैन धर्म के तेरापंथ सम्प्रदाय के ग्यारहवें आचार्य – आचार्यश्री महाश्रमणजी ने 9 नवम्बर 2014 को देश की राजधानी दिल्ली से अपनी अहिंसा यात्रा प्रारम्भ की थी। नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति जैसे समीचीन उद्देश्यों को लेकर प्रारंभ हुई यह यात्रा देश के अधिकांश राज्यों तथा नेपाल व भूटान की धरा पर भी मानव कल्याण का संदेश लेकर पहुंची। आचार्यश्री की इस अहिंसा यात्रा के प्रभाव से जहां आम आदमी ने नशामुक्ति और सद्भावना के पथ पर चलने की प्रेरणा ली, वहीं देश–विदेश के उच्च अधिकारियों, उद्योगपतियों एवं राष्ट्राध्यक्षों में भी इस यात्रा का प्रभाव दृष्टिगोचर हुआ। एक सम्प्रदाय के आचार्य होने के बावजूद भी धर्म और सम्प्रदाय से ऊपर उठकर आचार्यश्री महाश्रमण ने एक जनसंत के रूप में मानव मात्र के कल्याण के जो सूत्र प्रदान किए हैं, वे प्रणम्य है। इस अहिंसा यात्रा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए किए गए आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रयासों और कार्यों की गूंज एक गांव की नुक्कड़ से लेकर राष्ट्र की सीमाओं के पार तक पहुंची है। जीवन में नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति की अपरिहार्यता को स्वयं जीते हुए आचार्यश्री महाश्रमण ने जिस तरह प्रचारित–प्रसारित किया है, वह युगों–युगों तक जनमानस के स्मृतिपटल पर अंकित रहेगी। युग की समस्याओं के एक समाधान के रूप में प्रस्तुत आचार्यप्रवर की अहिंसा यात्रा के कार्य उन्हें युगप्रधान के रूप में प्रतिष्ठित करते हैं। पांव–पांव चलकर एक जैन संत से अपनी पदयात्रा से युगीन समस्याओं के समाधान का एक मार्ग प्रस्तुत किया है तथा अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व की अमिट छाप मानव मात्र के मन–मस्तिष्क पर छोड़ी है।

अहिंसा यात्रा
सद्भावना • नैतिकता • नशामुक्ति

अहिंसा यात्रा

- आचार्य श्री महाश्रमणजी ने 9 नवम्बर 2014 को भारत की राजधानी दिल्ली के लालकिले से अहिंसा यात्रा का शुभारंभ किया।
- सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति अहिंसा यात्रा के तीन उद्देश्य रहे।
- अहिंसा यात्रा के दौरान आचार्यश्री ने भारत के 20 राज्य – दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा, बिहार, मध्यप्रदेश, असम, मेघालय, नागालेण्ड, पश्चिम बंगाल, झारखण्ड, ओड़िशा, आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, कर्नाटक, पुदुचेरी, तेलंगाना, केरल, महाराष्ट्र, राजस्थान, छत्तीसगढ़ तथा नेपाल व भूटान में 18 हजार कि.मी. की पदयात्रा की।
- आचार्यश्री ने अपनी इस सप्तवर्षीय से अधिक पदयात्रा के दौरान हजारों–हजारों गांवों, कस्बों व शहरों के करोड़ों लोगों से सीध संपर्क साधा। विभिन्न जाति, वर्ग आदि के लाखों–लाखों लोगों ने सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रतिज्ञाएं स्वीकार कर अपने जीवन को उन्नत बनाया।
- लाखों छात्र–छात्राओं ने भी आचार्यश्री से सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संकल्प स्वीकार किए।
- इस यात्रा के दौरान आचार्यश्री के सान्निध्य में सैंकड़ों सर्वधर्म सम्मेलन तथा संगोष्ठियां समायोजित हुई जिससे समाज में काफी सुप्रभाव पड़ा।
- विभिन्न स्थलों पर कार्यशालाओं, ध्यान शिविरों, प्रवचनों, गोष्ठियों आदि के माध्यम से जनता के आंतरिक रूपान्तरण का सफल प्रयास भी इस यात्रा के दौरान किया गया।
- आचार्यश्री ने इस यात्रा के दौरान नक्सल प्रभावित बस्तर अंचल तथा उग्रवाद प्रभावित कार्बिएग्लोंग व बोडो क्षेत्र की भी यात्रा कर वहां के निवासियों को विशेष रूप से प्रेरित कर अहिंसा के पथ पर अग्रसर करने का प्रयास किया।
- आचार्यश्री की आठ माह की नेपाल यात्रा के दौरान नेपाल सरकार और नेपाली नागरिकों की ओर से अहिंसा यात्रा का विशेष समर्थन प्राप्त हुआ। नेपाल के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री सुशील कोइराला ने माना कि आचार्यश्री की इस अहिंसा यात्रा से भारत व नेपाल के संबंध प्रगाढ़ होंगे।
- नेपाल सरकार द्वारा अहिंसा यात्रा पर डाक टिकट जारी की गई।
- अहिंसा यात्रा भूटान प्रवास भी पारस्परिक संबंधों व सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की दृष्टि से विशेष फलदायक सिद्ध हुआ।
- अहिंसा यात्रा का भव्य समापन समारोह 27 मार्च 2022 को नई दिल्ली के तालकटोरा स्टेडियम में सैंकड़ों गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में हुआ, जिसका सीधा प्रसारण लाखों व्यक्तियों ने देखा।

आचार्यश्री महाश्रमणजी ने स्व–पर कल्याण के उद्देश्य से अब तक 52 हजार कि.मी. की पदयात्रा कर ली है।

आचार्यश्री के कुशल नेतृत्व में 800 से अधिक साधु–साध्वियां, 50 हजार से अधिक कार्यकर्त्ता महिलाएं तथा 40 हजार से अधिक युवक कार्यकर्त्ता के साथ लाखों अनुयायी समाजोत्थान के कार्य में संलग्न है।

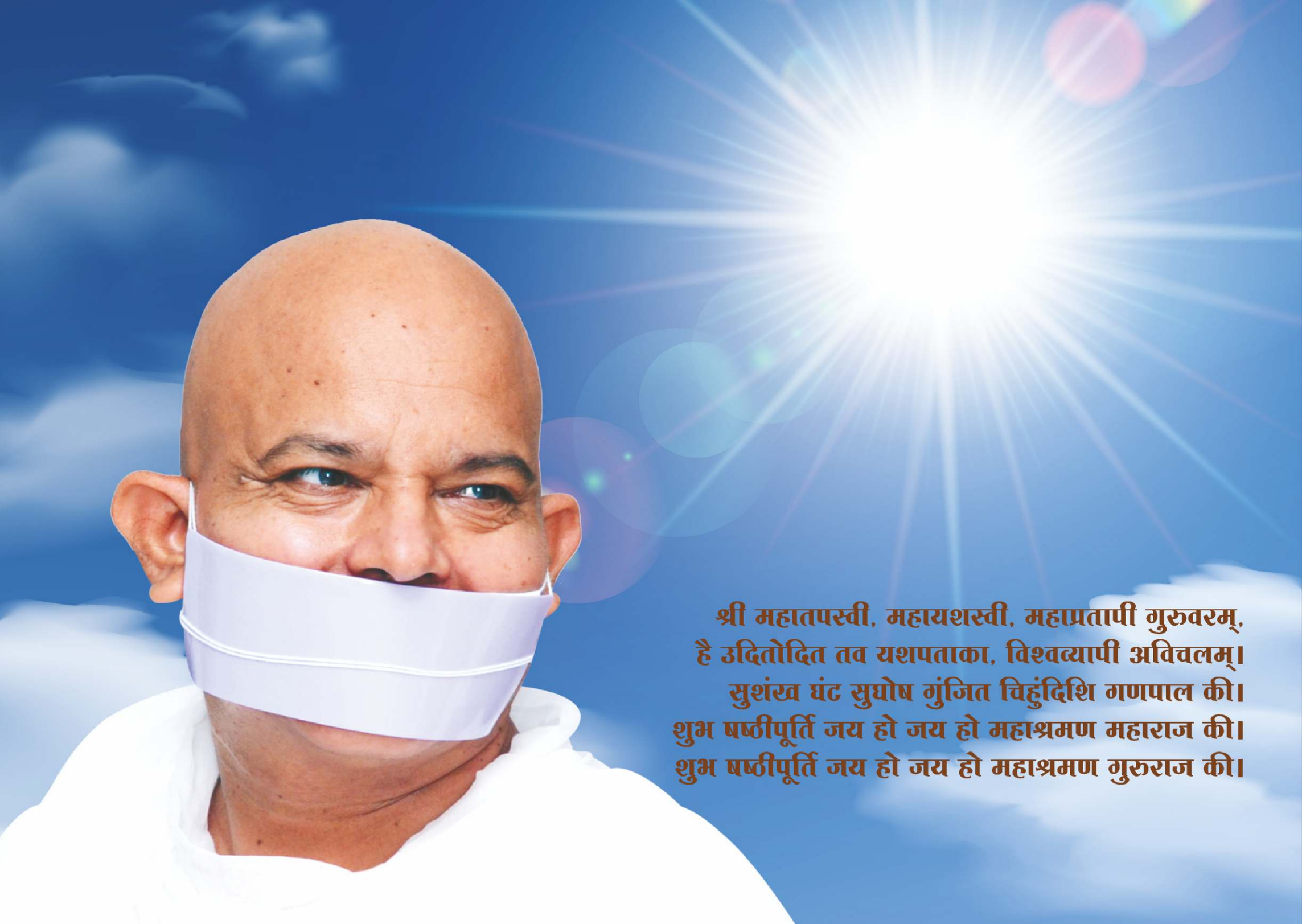

श्री महातपस्वी, महायशस्वी, महाप्रतापी गुरुवरम्,
है उदितोदित तव यशपताका, विश्वव्यापी अविचलम्।
सुशंख घंट सुघोष गुंजित चिहुंदिशि गणपाल की।
शुभ षष्ठीपूर्ति जय हो जय हो महाश्रमण महाराज की।
शुभ षष्ठीपूर्ति जय हो जय हो महाश्रमण गुरुराज की।

कोरोना कहर

समय भी सहमा हुआ था, स्तब्ध सब दिशाएं,
पवन भी थी मौन, थी गमगीन सी फिजाएं ।

सारी सड़कें सुनसान पड़ी थी। एक भयानक भय तारी था, हर मानव मन में। निकट सम्बन्धी भी एक–दूसरे से दूरियां बनाये हुए थे। सभी को अपनी जान के लाले पड़े थे। बड़ा दारूण समय, जिसकी किसी ने कभी कल्पना भी न की थी। सांस–सांस पर पहरा था। उस भीषण समय में जब समूचे श्रावक समाज के मन में एक संशय गहरा रहा था, हैदराबाद के चातुर्मास को लेकर। अफवाहों का बाजार गर्म था। स्कूल, कॉलेज और अन्य सारी सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएं बंद पड़ी थी। मार्ग में आने वाली भयानक कठिनाईयां आईने की तरह साफ दिखाई दे रही थी। लेकिन उस भयावह समय में अपने संकल्प पर अटल हिमगिरी से ऊंचे हौसले वाला एक निडर, निर्भय, निरामय कर्मयोगी अपने गंतव्य की ओर बिना किसी ऊहापोह निश्चिन्तमना अपने धवल काफिले के साथ सतत् अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता ही चला जा रहा था। कितनी अनुनय–विनय श्रावक समाज द्वारा की जाती रही पर सबका उत्तर एक मधुर स्मित! उस समय आपका एक जबरदस्त आपदा प्रबन्धक का नया रूप सामने आया।

करुणा के अजस्र स्रोत ने बहिर्विहारी सभी साधु–साध्वियों हेतु द्रव्य क्षेत्र काल भाव के अनुसार नियम बनाये, लेकिन अपनी आचार दृढ़ता से किसी भी परिस्थिति में अविचल रहने का मौन संदेश जन–जन में प्रसारित कर दिया। प्रशासनिक सभी आदेशों की समुचित अनुपालना करते हुए, उस भयाक्रांत समय में आपके व्यक्तित्व की अमाप्य गहराई और ऊंचाई के सामने बड़े–बड़े शूरमाओं के मस्तक नत हो उठे थे। धन्य है आपका अनुपमेय पौरुष!!

आचार्य महाश्रमण

अमृत महोत्सव : शासन माता उत्सव

30 जनवरी 2022, माघ कृष्णा त्रयोदशी का दिन। लाडनूं में महाश्रमणी संघ महानिदेशिका असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी के साध्वीप्रमुखाकाल के पचास वर्षों की संपन्नता के प्रसंग में साध्वीप्रमुखा अमृत महोत्सव का आयोजन। तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में प्रथम बार साध्वीप्रमुखा के प्रमुखाकाल के पचास वर्ष सम्पन्न हुए। ऐसा विलक्षण क्षण जिससे चतुर्विध धर्मसंघ में उल्लास का वातावरण दिखाई दे रहा था। आचार्यप्रवर ने अपनी असीम वत्सलता सहित साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी हेतु फरमाया – 'आज का उपक्रम अतिवैशिष्ट्य लिए हुए है। आज हमारे धर्मसंघ की एक उपलब्धि भी है कि साध्वीप्रमुखाजी पचास वर्षों से धर्मसंघ के सेवा कार्य में संलग्न हैं और आज शताब्दी के उतरार्द्ध में प्रवेश कर रही हैं। जैसे सूर्योदय से दुनिया को प्रकाश मिलता है और सर्दी में उसका ताप सुहावना लगता है, वैसे ही आपका और ज्यादा अभ्युदय होता रहे। दूसरों को आनुकूल्यपूर्ण औष्ण्य भी प्राप्त होता रहे, आपकी साधना में सूर्य की–सी तेजस्विता बढ़ती रहे। पूज्यप्रवर ने आर्षश्लोक आदि द्वारा साध्वीप्रमुखाजी के प्रति मंगलकामना अभिव्यक्त की। आचार्यप्रवर ने पट्ट से नीचे खड़े होकर कहा – 'हमारे धर्मसंघ में साध्वी समुदाय की सुव्यवस्था हेतु मुखिया की व्यवस्था है जिसे वर्तमान में साध्वीप्रमुखा के रूप में जाना जाता है। अपने साध्वीप्रमुखा कार्यकाल के 50वें वर्ष में गतिमान साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी हमारे धर्मसंघ की आज तक की आठ साध्वीप्रमुखाओं में सर्वाधिक साध्वीप्रमुखाकाल प्राप्त करने वाली साध्वीप्रमुखा है। तीन आचार्यों की सन्निधि में साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा करने का अवसर प्राप्त किया है। अनेक संदर्भों में यह कहा जा सकता है कि वे एक असाधारण साध्वीप्रमुखा हैं। अनेक विशेषताओं से संपन्न साध्वीप्रमुखा का होना हमारे धर्मसंघ के लिए एक गौरवास्पद आलेख है।'

'साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभाजी उम्र के नौवें दशक, संयमपर्याय का सातवें दशक, साध्वीप्रमुखाकाल के छठे दशक में प्रवेश व वात्सल्यभाव आदि प्रसंगों व विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए अमृत महोत्सव के महिमामंडित अवसर पर मैं साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी को 'शासनमाता' सम्मान से सम्मानित करता हुआ आत्मतोष की अनुभूति कर रहा हूं।'

आचार्य श्री महाश्रमणजी का साध्वीप्रमुखाश्रीजी के प्रति गहन आस्था और वत्सल्ता का जीता–जागता प्रमाण था। आचार्यप्रवर ने ऐसा अकल्पित कार्य कर दिखाया जिसके बारे में किसी ने न तो सुना होगा, न जाना होगा, न ही किसी ने कल्पना भी की होगी। यह प्रसंग आचार्य श्री महाश्रमणजी की महानता, निश्छलता और उदारता का द्योतक है।

आचार्य महाश्रमण

प्रलम्ब कीर्तिमान विहार

शासनमाता महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी स्वास्थ्य की दृष्टि से दिल्ली के श्री बालाजी एक्शन हॉस्पिटल में प्रवासित थी और पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर का दिल्ली में 20 मार्च को पधारना निर्णित था। 22 फरवरी 2022... गौरवशाली तेरापंथ धर्मसंघ का अप्रतिम दिन। अनुपमेय गुरु ने किया अनुपमेय संकल्प। परमाराध्य आचार्यप्रवर ने फरमाया– 'अब मेरा मानस बना है कि मैं दिल्ली जल्दी पहुंच जाऊं। जल्दी पहुंचने के लिए लम्बे विहार भी करने पड़ सकते हैं।' एक तरफ शासन माता के अन्तर्मानस में गुरु दर्शन की अमाप्य अभीप्सा तो दूसरी तरफ ज्योतिचरण से धरती के कण–कण को आलोकित करने वाले महादेदीप्यमान महासूर्य का ऊर्जस्वित संकल्प।

23 फरवरी से 2 मार्च 2022 तक आचार्यप्रवर ने फतेहपुर से खोटिया, रामगढ़, रतननगर, लाखाऊ, टमकोर, मलसीसर, चांदगोठी, पिलानी, डुलानियां आदि क्षेत्रों का स्पर्श करते हुए लोहारू में पदार्पण किया। दिल्ली पधारने की घोषणा के बाद श्रद्धा के क्षेत्रों के सिवाय प्रतिदिन बीस से ज्यादा किलोमीटर के विहार हो रहे थे। 3 मार्च 2022 से पूज्यप्रवर के उग्र विहार का क्रम शुरू हुआ। तीन दिनों तक प्रतिदिन क्रमशः 32.6 कि.मी., 35.2 कि.मी. एवं 34.6 कि.मी. का विहार रहा।

एक दिन में 47 किलोमीटर विहार का सृजित हुआ कीर्तिमान – शासनमाता के लिए शासननायक ने किया महाविहार

6 मार्च 2022 को लक्षित मंजिल से दूरी लगभग 46 कि.मी. अवशेष थी। ऐसा प्रतीत हो रहा था कि आज संकल्प पूर्ण न हो पाएगा। कहा है –

जबान रुक सकती है, अरमान नहीं रुकते।
तूफान रुक सकता है, महान नहीं रुकते।

महासूर्य के महातेजस्वी चरणकमलों की अविराम गति को भला कौन रोक सकता था? न आहार, न विश्राम, एक मात्र सुमेरु सम अविचल संकल्प – शासन माता को आज ही दर्शन प्रदान करना है। पुण्यपूंज पूज्यप्रवर के प्रलंब विहार के संवाद ज्यों–ज्यों लोगों को ज्ञात हो रहे थे, देश–विदेश में चारों और अद्भुत आश्चर्य एवं अभिनव उत्साह का वातावरण छा रहा था। ठण्डी मंद बयार और आसमान में छाए बादल ऐसे प्रतीत हो रहे थे कि मानो प्रकृति भी महासूर्य के महासंकल्प को साकार करने में अति उत्सुक बन गई। पूज्यप्रवर का कारवां प्रलम्ब विहारों से पावों में होने वाले घावों की परवाह किए बगैर निरन्तर गतिमान था।

आधुनिक संचार माध्यमों से चतुर्विध धर्मसंघ कभी मंजिल की दूरी नाप रहा था तो कभी समय की सूई देख रहा था। सभी ज्योतिचरण के द्रुतगामी बढ़ते हुए चरणकमलों की अस्खलित गति को विस्फारित नेत्रों से निहार रहे थे।

आचार्यप्रवर लगभग 9.9 कि.मी. का विहार कर दुल्हेड़ा पधारे। करीब 12.12 बजे नूनामाजरा पधारे। कुछ मिनटों के प्रवास के पश्चात् नूनामाजरा से प्रस्थित हुए तो प्रारंभ हो गया महातपस्वी आचार्य महाश्रमण का महाविहार। पूज्यप्रवर अपनी मंजिल की ओर बढ़ते जा रहे थे, उन चरणों की गति भी और बढती जा रही थी। देश-विदेश में अवस्थित चतुर्विध धर्मसंघ की उत्सुकता। सैंकड़ों मोबाइल में गूगल लोकेशन खुला हुआ था। सूदूर क्षेत्रों में बैठे लोग भी सोशियल मीडिया अथवा फोन के माध्यम से पल-पल की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास कर रहे थे। कई लोग सोशियल मीडिया के माध्यम से उस अनूठे दृश्य का सीधा प्रसारण कर रहे थे। मध्यान्ह करीब 2.05 बजे आचार्यप्रवर बहादुरगढ़ पधारे। अनुत्तर श्रद्धा एवं समर्पण से अभिभूत सैंकड़ों-सैंकड़ों गृहस्थ भी पूज्यप्रवर के आसपास पैदल चल रहे थे। अनभ्यस्त कई लोगों के लिए चलना अत्यन्त कठिन था और अभ्यस्त लोगों के लिए भी इतना लम्बा चलना मुश्किल था, किन्तु आज कोई भी परिजनों, मित्रों आदि के समझाने पर भी वाहन का उपयोग करने के लिए नहीं मान रहा था। मानों आचार्यप्रवर की ऊर्जा सबको ऊर्जावान बनाए हुई थी।

पूज्यप्रवर की बढती हुई औसत गति समय की गति को मानो पछाड़ने लगी तो असंभव लगने वाला लक्ष्य धुंधले रूप में संभव लगने लगा। प्रकृति मानो आज ज्योतिचरण के चरणकमल में प्रणत थी। आचार्यप्रवर मध्यान्ह करीब 2.48 बजे टिकरी बार्डर पर पधारे और दिल्ली में मंगल प्रवेश किया। मंजिल अब भी पन्द्रह कि.मी. दूर थी। आचार्यप्रवर अपने चरण कहीं भी प्राय: थाम नहीं रहे थे। मात्र पानी पीने आदि के लिए पूज्यप्रवर का रुकना हो रहा था। पूज्यप्रवर नांगलोई पहुंचे तो मंजिल अब मात्र कुछ ही दूर रह गई। सफलता स्पष्ट नजर आने लगी। महायायावर के महाविहार का अलौकिक दृश्य देख जनता आश्चर्यचकित थी, अपूर्व श्रद्धाभाव से प्रणत थी, अनुत्तर भक्ति भाव से आंखें नम थी। भक्तों के दिलों में उमड़ता श्रद्धा का पारावर परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण के शिष्य एवं तेरापंथी होने के गौरव को मुखरित कर रहा था। गूगल, घड़ी और पूज्यचरणों पर टिकी सैंकड़ों भावविभोर नजरों से अश्रुधारा बहने लगी। आश्चर्य से लोगों की आंखें चौड़ी हो रही थी, किन्तु श्रद्धाभाव उन्हें नत होने को मजबूर कर रहा था। हर मुख पर एक ही स्वर था-'धन्य हैं गुरुदेव, महान हैं गुरुदेव।' रोमांच से श्रद्धालुजनों के रोंगटे खड़े हो रहे थे।

हर कोई उस दुर्लभतम पल के साक्षी बनने के लिए आतुर था, उस दृश्य को निहारने हेतु उत्सुक था कि कब शासननायक और शासनमाता का साक्षात्कार होगा। प्रतीक्षा के वे पल बहुत ही करीब थे, किन्तु उत्कंठित लोगों के लिए उन्हें काटना पहाड़ जैसा था। हिमालय-सा अडोल संकल्पी महापुरुष उन पहाड़ जैसे पलों को भी आसानी से पाटता जा रहा था। आखिर वह पल आ ही गया, जब दृढ़निश्चयी ज्योतिचरण ने दिल्ली के पश्चिम विहार में स्थित एक्शन बालाजी हॉस्पिटल में प्रवेश कर ही लिया। आचार्यप्रवर को मंजिल तक पहुंचा देखकर वहां उपस्थित लोगों ने उत्साह के साथ बुलंद जयघोष उच्चारित करना प्रारंभ कर दिया। सायं करीब छः बजे शासनमाता के कक्ष में प्रवेश कर महाप्रतापी पूज्यप्रवर ने स्वयं भूमि पर विराजमान होकर शासन माता को तीन बार वन्दना की। क्या एक आचार्य निरहंकारिता का इससे बढ़ कर कोई श्रेष्ठतम उदाहरण प्रस्तुत कर सकता है? शासन माता का रोम-रोम आनन्दित, प्रमुदित एवं रोमांचित था। अपूर्व भक्ति भावपूर्वक पूज्यप्रवर को वन्दना करने लगी। उसी समय लाखो आंखों ने एक अनुपम, अद्वितीय, अलौकिक, अनिर्वचनीय दृश्य देख अपार धन्यता का अनुभव किया।

महायशस्वी, महातपस्वी, महावर्चस्वी, महातेजस्वी परम पूज्य आचार्य प्रवर ने 47 कि.मी. का महाविहार कर तेरापंथ धर्मसंघ की आचार्य परम्परा में नया कीर्तिमान स्थापित किया। प्रलंब विहार के पश्चात् भी भूमि पर विराजमान होकर शासन माता की तीन बार वन्दना करना संपूर्ण जैन समाज, जैन शासन का अविस्मरणीय अद्वितीय दृश्य था। पूज्यप्रवर का शासन माता के प्रति बहुमान, सम्मान एवं कृपाप्रसाद का विलक्षण भाव और शासन माता की पूज्यप्रवर के प्रति अनन्य भक्ति, अविचल आस्था एवं उत्कर्ष श्रद्धा से परिपूर्ण कृतज्ञता का भाव प्रत्येक को प्रकर्ष आनन्दित और रोमांचित कर रहा था। एक मात्र स्वर गूंज रहे थे और शाश्वत गूंजते रहेंगे -

विहार का कीर्तिमान
- मेरे गुरु महान!

आचार्य महाश्रमण

महाश्रमण पदचिन्ह जहां बहे मनुजता धार वहां

नई संस्कृति का अभ्युदय,
होता देख धार्मिक जग में ।
अस्ताचलगामी सूरज के रथ
के अश्व रुक गये नभ में ।।

कहा सूर्य ने, रुको यहाँ पर,
प्रसव नये संस्कारों का जब
यहाँ हो रहा, चूक न जाएं
दृश्य एक भी आँखों से अब ।।

अथक, अनवरत रहा दौड़ता,
लगा मुझे ललकार रहा है ।
मुझे क्या पता शासन माता
खातिर योगी भाग रहा है ।।

पंख लगा उड़ कर आया ज्यों,
आहार पानी सब बिसराया ।
एक लक्ष्य दर्शन देने के सिवा
याद कुछ और न आया ।।

नव इतिहास रचा भारत का,
युगों–युगों के श्राप रो दिये ।
योगीश्वर ने महापुरुषों के किये
हुए सब पाप धो दिये ।।

सीता, द्रोपदी और अहिल्या
की आत्मा को शांति मिल गई ।
आधी दुनिया के चेहरों पर
अब शाश्वत मुस्कान खिल गई ।।

आसन बिछा धरा पर बैठा,
हुआ सौ गुना नभ से ऊंचा –
योगीराज का कद, आत्मा के
बल ने चित्र नया ही खींचा ।।

घुटनों के बल बैठ प्रदक्षिणा
वंदन किया प्रभु ने सादर ।
उधर कर रही वंदन प्रमुखा,
देकर गुरु को भर–भर आदर ।।

स्थापित कर आदर्श नवेले,
धर्म जगत को राह दिखाई ।
युगोंयुगों से चली आ रही,
लिंग भेद की नीति मिटाई ।।

तेरापंथ सम्राट! आपको
नाप सके, सामर्थ्य कहाँ है !
महाश्रमण पदचिन्ह जहाँ पर,
बहे मनुजता धार वहाँ है ।।

प्रशांत चेता
ऊर्जाप्रदाता
संघ मार्तण्डेय
श्रुतधर क्षेमंकर
स्थिरमति
शुभंकर धर्मद्वीप
अपूर्व चिंतामणि
मनीषी
सिद्धपुरुष
अखिलज्ञ
ऊर्जा अक्षयकोष
श्रमण श्रेष्ठ
ऋजुस्वभावाचित्त
परम अर्हता सम्पन्न
ओजस्वी
विवस्वत
ऋजुता के रक्ताम
पुष्कराक्ष
करुणा सागर
सुवर्चस्
शुभंकर
वरेण्य
इज्य
विश्वरूप
संयम शिरोमणि
नवयुग निर्माता
समत्वयोगी
करुणासिंधु
शुक्ल सम्पन्न

युगप्रधान

यूं तो धरती पर जन्म लेने वाला हर इंसान अपने भीतर कोई न कोई विशिष्टता लेकर ही पैदा होता हैं लेकिन महाश्रमण जैसे कतिपय महामानव इस धरा पर ऐसे भी अवतरित होते हैं जो अपने जगमगाते दिव्य व्यक्तित्व और भव्य कर्तृत्व की रश्मियों से सम्पूर्ण युग को प्रकाशित करने का बीड़ा अपने सुगठित स्कन्धों पर उठाते हैं।

ऐसे विराट व्यक्तित्व की युग स्वयं अभ्यर्थना करने आगे आता है और उसे युगप्रधान के पद पर विराजित कर स्वयं को धन्य कर लेता है। आपने अपने अड़तालीस वर्षों के संयम जीवन में न केवल स्वयं साधना की शिखर ऊंचाईयों का स्पर्श किया है, अपितु इस युग को भी आलोक प्राप्ति का अवबोध दिया है। आपके पुरुषार्थी जीवन का हर पल एक बोधपाठ है। आपकी सहज, सादगीपूर्ण, आचार आबद्ध जीवन शैली मुक्ति के द्वार पर दी जाने वाली थपथपाहट है। आपकी चैतन्यता से राह की हर कालिमा कांपती है। आपकी करुणा के आगे कठोरता थरथराती है। आपकी निर्भयता के आगे बड़े से बड़े विघ्न घुटने टेकते नज़र आते हैं। बड़े से बड़े आँधी–तूफान या जलजले आपके सम्मुख अनेकों बार मायूसियों से अपने हाथ मलते देखे गये हैं। निराभिमानी आपकी प्रवृति के सम्मुख अभिमान की सुदृढ़ दीवारें भरभरा कर गिर पड़ती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों को ध्वस्त कर देने को आपके चेहरे पर सदाबहार खिली रहने वाली केवल एक स्मित ही काफी है। कदम–कदम पर कीर्ति स्तम्भ रचने वाला यह महायोगी उन सबसे बेखबर अपने पूर्ववर्ती आचार्यों द्वारा सौंपी विशाल संपदा का योगक्षेम करता, एक के बाद एक प्रकाश द्वार खोलता ही जा रहा है। युग के भाल पर चाँदनी का विजय–तिलक उकेर कर राह को रोशन करने वाले कर्मवीर, परम पुरुषार्थी, अध्यात्म पथ के अधिनेता को सम्पूर्ण संघ द्वारा युग–प्रधान से उपमित किए जाने पर समस्त चेतन और अचेतन जगत हर्ष की हिलोरों में बह रहा है। भविष्य के गर्भ में न जाने अभी कितने आलोक–पुंजों का सृजन आपके शुभंकर करकमलों से होने वाला है, अभी कितने धरातल को आपके चरण–कमलों से सहलाया जाना है, कितनी नई संभावनाएं यथार्थ बन कर जन्म लेनी वाली है, इसकी प्रतीक्षा में युग ने पलकें बिछा रखी है।

देव चिरायु रहो धरा पर
अभातेम मंडल अभिलाष
प्रभु की पावन सन्निधि भरती
हर मन में अनुपम उल्लास

आचार्य महाश्रमण महिला मंडल द्वारा संचालित जैन स्कॉलर परियोजना

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के स्वर्णिम जन्मदिन पर आयोजित अमृत महोत्सव के शुभ अवसर पर अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा जैन स्कॉलर योजना श्रीचरणों में भेंट की गई। तत्कालीन राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा पाटिल की उपस्थिति में गुरुदेव ने फरमाया कि अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा भेट में दी गई यह योजना मुझे अच्छी लगी है। संस्था ने सुंदर उपहार भेंट किया है। केलवा में 11 जुलाई 2011 से इसकी दस दिवसीय प्रथम कार्यशाला प्रारंभ हुई जिसमें 21 संभागियों ने रजिस्ट्रेशन करवाया। अंधेरी ओरी के सामने भिक्षु भवन में इसकी कक्षाएं आयोजित हुई।

इन दस वर्षों में आचार्यप्रवर के आशीर्वाद से जैन स्कॉलर योजना ने बीज से वृक्ष का आकार ले लिया है। इस त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम में तत्त्वज्ञान, द्रव्य मीमांसा, देव–भाषा संस्कृत, आगम–भाषा प्राकृत के साथ कर्म ग्रन्थ एवं प्राच्य लिपियों का भी गहन अध्ययन कराया जाता है। षष्टिपूर्ति के अवसर पर जैन स्कॉलर पाठ्यक्रम के चतुर्थ बैच का शुभारम्भ हो चुका है।

षष्टिपूर्ति के पावन अवसर पर जैन स्कॉलर्स के शुभंकर प्रयास से उत्तराध्ययन एवं दशवैकालिक सूत्र की ब्राह्मी लिपि में पाण्डुलिपि तैयार की है। तेरापंथ धर्मसंघ में ही नहीं अपितु समग्र जैन धर्म में प्रथम बार यह दुष्कर कार्य पूर्ण हुआ है। इसी के साथ जैन स्कॉलर्स द्वारा सृजित संज्ञा कोष भी षष्टीपूर्ति के अवसर पर श्रीचरणों में समर्पित करते हैं।

षष्टिपूर्ति

आचार्य महाश्रमण

गुरु की कृपा मिली हर अधिवेशन में

सन् 2010 – सरदारशहर
'रक्षिता' अधिवेशन

सन् 2011 – केलवा
'ऊर्जा' अधिवेशन

सन् 2012 – जसोल
'सृजन' अधिवेशन

सन् 2013 – लाडनूं
'सोपान' अधिवेशन

सन् 2014 – नई दिल्ली
'ओजस' अधिवेशन

सन् 2015 – बिराटनगर
'ओजस्विता' अधिवेशन

आचार्य महाश्रमण

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल
नतमस्तक है गुरु चरणों में

सन् 2016 – गुवाहाटी
'एकता' अधिवेशन

सन् 2017 – कोलकाता
'योगक्षेम' अधिवेशन

सन् 2018 – चेन्नै
'संकल्प' अधिवेशन

सन् 2019 – बेंगलुरु
'उन्नयन' अधिवेशन

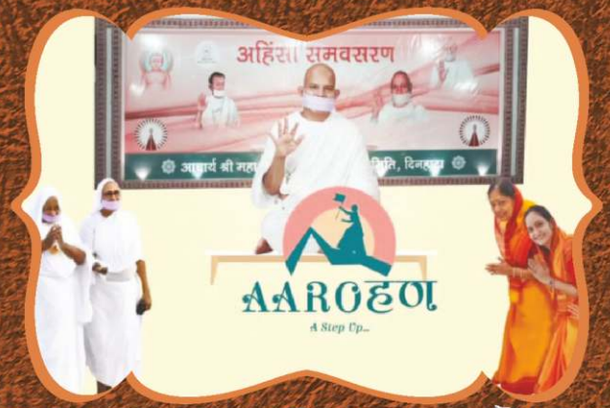

सन् 2020 – हैदराबाद
(ऑनलाइन)
'आरोहण' अधिवेशन

सन् 2021 – भीलवाड़ा
'समर्पिता' अधिवेशन

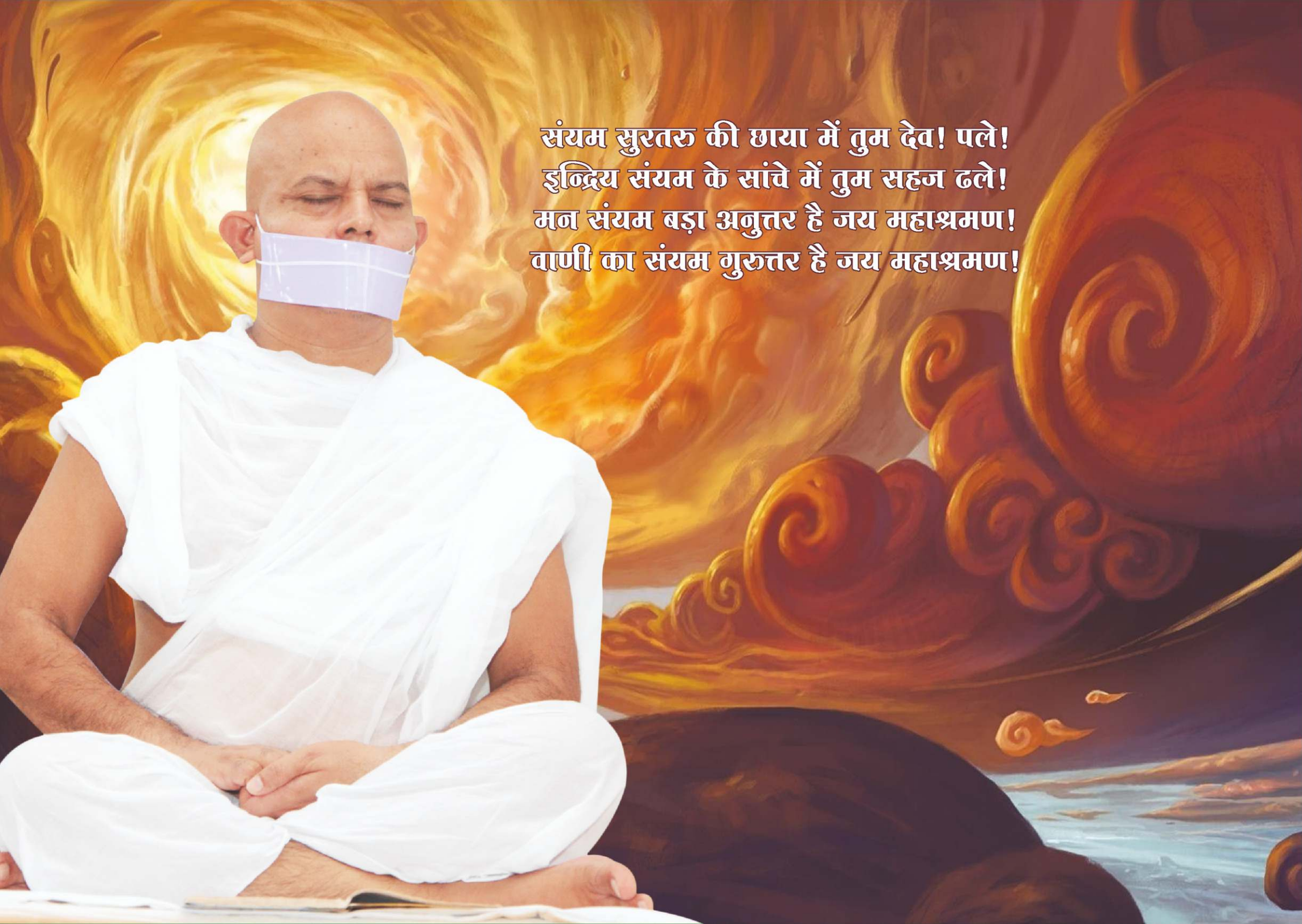
संयम सुरतरु की छाया में तुम देव! पले!
इन्द्रिय संयम के सांचे में तुम सहज ढले!
मन संयम बड़ा अनुत्तर है जय महाश्रमण!
वाणी का संयम गुरुत्तर है जय महाश्रमण!

आचार्य महाश्रमण

ग्यारह सूत्रीय संकल्प साधना

गुरु पादांबुज में किया समर्पित अनूठा नीवी तप उपहार
जपें नवकार, हो मौन, सामायिक विगय वर्जन संग त्याग चौविहार
जन्मोत्सव, पट्टोत्सव बनें चिरायु, यही अन्तर्मन उद्गार

11

ग्यारहवें अधिशास्ता की षष्टिपूर्ति
के अवसर पर महिला समाज द्वारा समर्पित
ग्यारह सूत्रीय संकल्प साधना
1 मई से 11 मई 2022 तक

- 11 दिनों तक सायंकालीन गुरु वन्दना (परम आचार कुशल ...)
- 11 द्रव्यों से अधिक खाने का त्याग
- 11 बार चतुर्विंशति–स्तव (लोगस्स) का जप
- 11 घण्टे चौविहार प्रत्याख्यान
- 11 बार महाश्रमण अष्टकम् स्वाध्याय
- 11 माला नमस्कार महामंत्र की
- 11 घण्टे मौन
- 11 जमीकन्द सेवन के प्रत्याख्यान
- 11 द्रव्यों के साथ नीवी का संकल्प
- 11 बार पैंसठिया छन्द का जप
- 11 प्रकार के इच्छित त्याग वर्ष भर के लिए

षष्टिपूर्ति

आचार्य महाश्रमण षष्टिपूर्ति पर महिला मंडल द्वारा उपहृत भेंट

आठ कर्मों पर आधारित पुनरावर्तन गेम

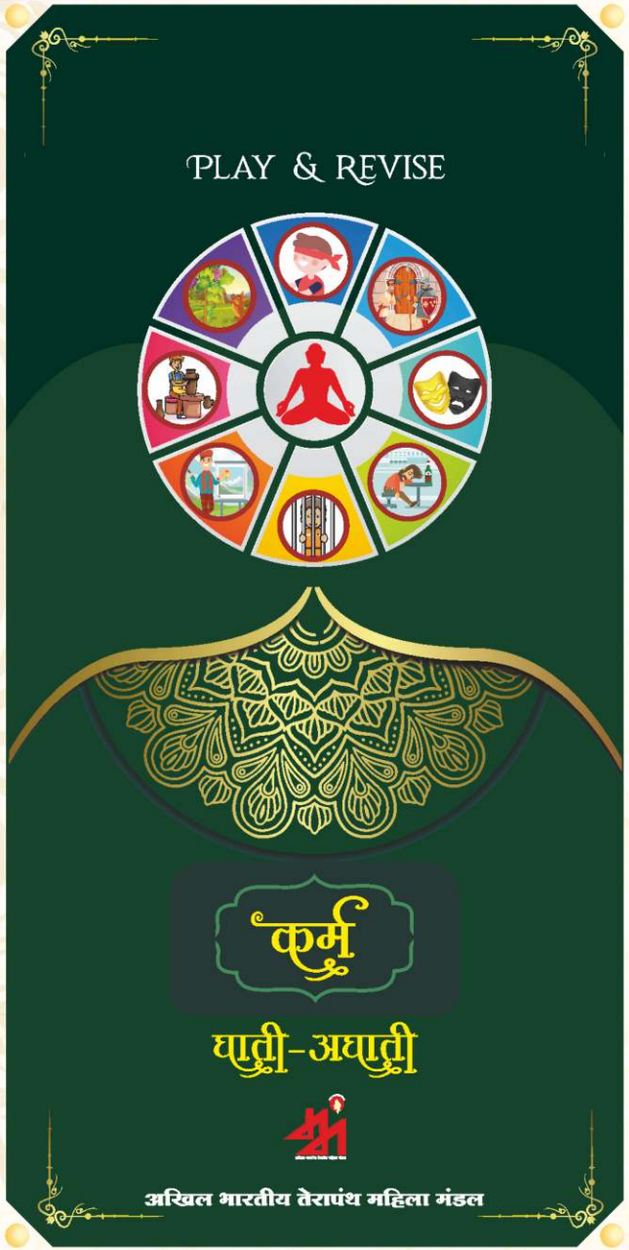

आचार्य महाश्रमण

षष्टिपूर्ति पर महिला मंडल द्वारा उपहत भेंट

कालूतत्त्वशतक वर्ग प्रथम एवं द्वितीय
पर आधारित पुनरावर्तन गेम

अभातेममं विशेष

18 पाप पर
आधारित अनूठी
36 दिवसीय
प्रयोगशाला

कर्म एवं उत्तरप्रकृतियां तथा
कालूतत्त्वशतक प्रथम एवं द्वितीय वर्ग
पर आधारित गेम के आर्थिक सौजन्यप्रदाता
श्रीमती मुल्तानीदेवी संचेती
श्रीमती सरिता संचेती
(मोमासर – अहमदाबाद)

षष्टिपूर्ति

आचार्य महाश्रमण अभिनन्दन पत्र

हे अमृत पुरुष!

षष्टिपूर्ति के इस अमृत महोत्सव पर दसों दिशाओं से बरसती सरस वर्धापना की अमृत रसधार से सराबोर इस अमृत बेला की अविरल पुलकन चिरायु हो! चिरायु हो!!

हे प्रकाशपुंज!

सूर्य के समान दैदीप्यमान तेजस्वी संघ के आप प्रकाशपुंज हो जिससे निकलती प्रज्ञा के आलोक की रश्मियां जन–जन के माानस को आलोकित एवं आन्दोलित करती नव–जीवन का संचरण करती है। यह दिव्य रश्मियां चिरायु हो! चिरायु हो!!

हे प्रशस्त पुण्य पथ के पथिक!

कठिन दृढ़ निर्णयों को कोमलता से ढालना, अखण्ड ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप और वीर्य की अनुपालना, कुशल अनुशासना, योगक्षेम नेतृत्व, दायित्व के प्रति प्रखर जागरूकता, निर्मल सहजता, सत्य निष्ठा के प्रति हमारी अटूट श्रद्धा चिरायु हो! चिरायु हो!!

हे योगीराज!

संसार सागर में पंक से निर्लिप्त कमल सम अद्‌भुत साधक, इस गहन सागर (संघ) में विचरित सभी प्रकार के जीवों पर, तीर्थों पर करुणा दृष्टि बरसाने वाले हे सागरवर–गंभीरा – आध्यात्मिक गंभीरता से गहराई में उतरकर नित–नूतन–मणि–माणक्य से संघ की मंजुषा भरते रहें। आपकी गंभीर मेधा चिरायु हो! चिरायु हो!!

हे ध्वजारोही!

आपश्री के युगप्रधान अलंकरण एवं षष्टिपूर्ति के ऐतिहासिक अवसर पर महिला समाज की श्रद्धासिक्त अभिवन्दना। आपकी जीवन यात्रा का चिर यौवन चिरायु हो! चिरायु हो!!

अभिवन्दना सहित श्रद्धानत

सौभाग बैद	नीलम सेठिया	सरिता डागा	विजयलक्ष्मी भूरा	मधु देरासरिया
चीफ ट्रस्टी	अध्यक्ष	उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष	महामंत्री

रंजू लुणिया	नीतू ओस्तवाल	निधि सेखानी	सरिता बरलोटा
कोषाध्यक्ष	सहमंत्री	सहमंत्री	प्रचार प्रसार

एवं समस्त राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्यगण

सरदारशहर, 11 मई 2022

अभिवन्दना विशेषांक

आभार सौजन्यकर्त्ताओं का

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

आचार्यश्री महाश्रमणजी द्वारा संबोधित
'गृहस्थ साध्वी'
स्व. श्रीमती रतनीदेवी गोठी
की पुण्य स्मृति में

श्री सुमतिचन्द – श्रीमती सुमनश्री,
श्री योगेन्द्र – श्रीमती नीलम गोठी
(सरदारशहर–मुम्बई)

स्व. श्रीमती रेशमीदेवी एवं
स्व. श्री भेरचन्दजी गोगड़ की स्मृति में

सर्वश्री भरतकुमार, पीयूषकुमार, प्रान्जुल,
आयुष, तन्मय, धैर्य
एवं समस्त गोगड़ परिवार
(पाली–मारवाड़)

Shree Ganesh Print-fab

Pranjul

:: फर्म ::
श्री गणेश प्रिन्ट फेब. प्रा.लि.
प्रान्जुल फेशन प्रा. लि.
पाली–मारवाड़

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें अधिशास्ता,
महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण
के षष्टिपूर्ति एवम् युगप्रदान अलंकरण
पर हार्दिक अभिनन्दन एवम् मंगल कामना

हमारे प्रेरणा पुंज
श्रद्धा की प्रतिमूर्ति दादीसा श्रीमती घीसीबाई
पूज्य पिताश्री पुखराजजी धोका
ममतामई मातुश्री मेहताबाई
के श्रीचरणों में विनयानत प्रणाम

इंदरचंद, धर्मीचंद, महावीरचंद,
संतोषकुमार, प्रसन्नकुमार, नितेशकुमार,
दीपक, नमन, जितेन्द्र, मनन, देवांश, हर्षित,
दिनेश, परम धोका परिवार
(होसकोटे – बेंगलुरु – मुसालिया)

श्री दौलत – श्रीमती सरिता डागा
श्री कैलाश – श्रीमती विजया डागा
(श्रीडूंगरगढ़ – जयपुर)

श्री आनन्द एवं श्रीमती निधि सेखानी
के वैवाहिक रजत जयन्ती वर्ष
के उपलक्ष्य में
श्री रतनलाल सेखानी
श्री अमित – श्रीमती नेहा सेखानी
(बीदासर – सूरत)
किरण इन्डस्ट्रीज प्रा. लि.

युगप्रधान
आचार्य श्री महाश्रमणजी
की षष्टिपूर्ति एवं युगप्रधान अलंकरण
पर श्रद्धाप्रणत् अभिवन्दना

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

: पंजीकृत कार्यालय :
रोहिणी भवन
जैन विश्वभारती
लाडनूं – 341 306.
जिला : नागौर (राज.)

: अध्यक्षीय कार्यालय :
नीलम सेठिया
28/1 शिवाया नगर 4th क्रॉस
रेड्डियूर, सेलम 636 004.
मोबाइल : 9952426060

www.abtmm.org | Mobile App : abtmm | facebook.com/abtmmjain/ | instagram@abtmmterapanth

लिखें शक्ति की नई ऋचाएं, अनुशासन के दीप जलाएं

DESIGNED & PRINTED BY KHATER 98400 85004